

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक

(वर्धानों का निर्गमन और प्रबंध)

विनियम 1990

म. 31.11.89 की तारीख/मात्राचय विनियम.—भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक का नियंत्रक द्वारा भारतीय लघु उद्योग विकास देक प्रधिनियम, 1989 (1989 का 39) द्वारा 52 द्वारा प्रदत जीतियों का प्रयोग करते हुए और भारतीय प्रयोगित विकास बैंक के द्वारे प्रवृत्ति से नियंत्रित विनियम दत्त है। प्रयोग:-

1. मधित नाम और लागू होना: (1) इन विनियमों का मधित नाम भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (वर्धानों का निर्गमन और प्रबंध) विनियम 1990 है।
(2) ये विनियम भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक प्रधिनियम, 1989 की धारा 15 की अधारा (1) के बंड (क) के अधीन लघु उद्योग बैंक द्वारा पुरोधत और वितरण गए वर्धानों का लघु होते।
2. परिभाषाएँ: इन विनियमों में जब तक कि विषय या भद्रमें शोई प्रतिकूल बात न हो—
(क) "प्रधिनियम" में भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक प्रधिनियम, 1989 यमिप्रत है।
(म) "वर्धानों" में अधिनियम की धारा 15 की अधारा (1) के बंड (क) के प्रधीन लघु उद्योग बैंक द्वारा पुरोधत या वितरण गए वर्धान यमिप्रत है।
(ग) "लघु उद्योग बैंक" से अधिनियम के अधीन स्थापित भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक यमिप्रत है।

(घ) "विस्तित बधाव" में वह वंधाव यमिप्रत है जिसके महत्वपूर्ण भाग प्रारंभीय और प्रामाण हो गए हैं और बधाव के महत्वपूर्ण भाग ये होने हैं जहाँ:

- (1) वंधाव की मंदान, नियंत्रण, जिसमें वह संबंधित है, बधाव का प्रक्रित मूल या द्वारा का मंदाय यमिविवित किया गया है, या
- (2) स्टाकन या पाने वाने का नाम दिया गया है, या
- (3) नवोकरण रसीद या अंतर्गत ज्ञापन दिया गया है।
- (इ) "प्रस्तु" में इन विनियमों की अनुमती में दिया गया प्रस्तु यमिप्रत है।
- (ब) "जो गया बधाव" में वह बधाव यमिप्रत है जो वारतव में यो गया है और वह बधाव यमिप्रत नहीं होगा जो दावेदार के प्रतिकूल किमी व्यवित के बड़जे में है।
- (ए) "विहित बधाव" में वह बधाव यमिप्रत है जिसके महत्वपूर्ण भाग बिहू, पटे या नुकसानप्रस्तु है।
- (ज) "नियंत्रण कार्यालय" में लघु उद्योग बैंक का वह कार्यालय यमिप्रत है जिसकी वर्द्धियों में बंधाव गविमटीहूत किया गया है या रजिस्ट्रीहूत किया जा सकेगा।
- (झ) "विहित प्रधिकारी" में लघु उद्योग बैंक का महाप्रधिकारी या ऐसे प्रधिकारी यमिप्रत है जो लघु उद्योग बैंक का नियंत्रक द्वारा धारा विनियम 11, 12, 13, 15, 17, 19, और 20 के प्रयोगनों के लिए प्रधिहृत गया जाएँ।
- (ञ) स्टाक प्रमाण पत्र से विनियम 3 के अधीन जाती किया गया स्टाक प्रमाणपत्र यमिप्रत है।

- (३) बहुदार्ता का नाम सार उत्तर दस्तावेज का ईंग प्राप्ति - (१) वंधु वंधु
(क) विश्वी विधिवत वाचित को या उसके प्रावेशानुसार संदेश
वचनात्र के, या
- (ख) लघु उद्योग बैंक के वहियों में रजिस्ट्रीडूक्ट स्टाक के हप में
जिनके लिए स्टाक प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं, निर्गमित
किया जाएगा।
- (२) (क) वंधु वाचित के हप में निर्गमित बंधपत्र परिणामानुसार, संदेश
वचनात्र को लघु उद्योग बैंक परिवार द्वारा अनुरोध
जाएगा।
- (ख) वंधु वाचित के हप में जारी किए गए वंधु वाचित पर कोई
विश्वी पृष्ठाकान के उद्देश्य के लिए विधिमान्य नहीं होगा,
यदि ऐसा लेख वंधपत्र द्वारा प्रभिहित रखने के केवल
एक या साथ सर्वरण करने के लिए तात्परित है।
- (३) स्टाक प्रमाणात्र के हप में निर्गमित और लघु उद्योग बैंक की
वहियों में रजिस्ट्रीडूक्ट बंधपत्र वर्षा ५ में अनुरोध के दस्तावेज
का निरापत्त करने का तो पूर्णतः या अंगतः अनुरोध होना
ऐसा मामले में अनुरोध स्टाक के हप में, जिसमें अनुरोध संबंधित
है, निर्गमित वंधात्रों का धारक समझा जाएगा जब तक कि
अनुरोधी का नाम लघु उद्योग बैंक द्वारा रजिस्ट्रीडूक्ट नहीं
किया जाता है।
- (४) (क) इसमें प्रतिकूल विश्वी वाचित के होते हुए भी लघु उद्योग बैंक
वंधपत्रों के हक्कदार व्यक्तिके अनुरोध पर वंधपत्रों के
हक्कदार व्यक्तिके नाम में लघु उद्योग बैंक द्वारा रखे
जाने वाले खाते में एक प्रविटिट के हप में बंधपत्र
निर्गमित करेगा।
- (ख) वंधु वाचित या नाम वंधात्रों की प्रतिनिधि के समय प्रारम्भ में
लघु उद्योग बैंक की लेखाब्धियों में प्रविटिट के हप में
या वार भव में वचन पत्र या स्टाक के हप में निर्गमित
वंधात्रों के संपर्कित दारा निर्गमित किए जा सकेंगे।
- (ग) यदि कोई वंधात्र वहने हीं वचनपत्र के हप में निर्गमित
किया जा चुका है तो लघु उद्योग बैंक में विश्वी वाचित में
प्रविटिट के हप में उसको धारण करने का इच्छुक बंधपत्र
धारक प्रवस्ता XI में अध्ययनें करेगा और लघु उद्योग
बैंक की वहियों में किसी खाते में प्रविटिट के हप में बंधपत्र
ओं धारण करने के लिए लघु उद्योग बैंक के पत्र में
सम्पूर्ण रूप में पृष्ठाकृत बंधपत्र का प्रस्तरण करेगा।
- (घ) यदि वंधु वाचित स्टाक प्रमाणपत्र के हप में निर्गमित किया
गया है तो धारक बंधपत्र का लघु उद्योग बैंक के पक्ष में
अनुरोध अनुरोध के साथ करेगा कि उसे बंधपत्र धारक
के नाम में लघु उद्योग बैंक द्वारा रखे जाने वाले खाते में
प्रविटिट के हप या अनुरोधी या संपरिवर्तित करा सकेंगा।
- (इ) लघु उद्योग बैंक द्वारा रखे गए खाते में प्रविटिट के हप
में बंधपत्रों को धारण करने वालों कोई व्यक्तिप्रवृत्ति
XII में यावेदन करके बंधपत्रों को वचनपत्र या स्टाक
प्रमाणपत्र के हप या अनुरोधी या संपरिवर्तित करा सकेंगा।
- (ख) लघु उद्योग बैंक की वहियों में खाते में प्रविटिट के हप में
वंधात्र निर्गमित करने के लिए या पहले ही निर्गमित
अंगतः या वंधात्र या लघु उद्योग बैंक की वहियों में
प्रविटिट का नाम स्टाक में संपरिवर्तित करने के लिए
यांग वहियों में प्रविटिट के हप में स्टाक को या वंधात्र
या स्टाक प्रमाणात्र करने के लिए कोई व्यक्तिप्रवृत्ति
नहीं है।

- (ज) लघु उद्योग बैंक की वहियों में प्रविटिट के हप में निर्गमित
या धारात्मक वंधात्र प्रवस्ता XIII में अनुरोध विषयत का नियम
दान करके अनुरोध होगे। ऐसे मामलों में अनुरोध ऐसे
वंधात्रों का, जिनके संबंध में अनुरोध है, धारक ऐसे सम्पूर्ण
तक समझा जाएगा जब तक अनुरोधी का नाम लघु उद्योग
बैंक से प्रविटिट नहीं कर दिया जाता है।
- (५) (क) वंधपत्र लघु उद्योग विकास बैंक के प्रबंध नियंत्रण के या
उनके अनुपस्थिति में विश्वी वाचानात्रक नियंत्रण धोरण
उत्तरांश वंधपत्रक के हस्तान्तर से निर्गमित किया
जाएगा जो मुद्रित, उत्तरांश, विश्वी किया हुआ या लघु उद्योग
बैंक के नियंत्रणानुसार किसी दूसरी वाक्तिक प्रक्रिया द्वारा
जाए गोगा।
- (ख) इन प्रकार मुद्रित, उत्तरांश, विश्वी किया हुआ या अन्यथा
उत्तरांश हस्तान्तर उसी प्रकार विधिमान्य होगा भानो
वह हस्तान्तरकर्ता के ग्राने ही उचित हस्तान्तर में किया
गया है।
- (ग) (क) वंधनायक के हप में किसी वंधात्र का शोई भी पृष्ठाकृत या
स्टाक प्रमाणपत्र के हप में किसी बंधपत्र के मामले में अनुरोध की कोई
नियम तब तक विधिमान्य नहीं होगी जब तक वह धारक के या सम्पूर्ण
हप से गठित, उसके पटरी या प्रतिनिधि के हस्तान्तर से न की गई
हो, ऐसी लियत किसी बंधपत्र की दशा में स्वयं बंधपत्र के पृष्ठ पर
वचनपत्र के हप में भी और किसी स्टाक प्रमाणात्र की दशा में अनुरोध की
नियमित पर लियी जाएगी।
४. न्यास मान्यता प्राप्त नहीं है—(क) लघु उद्योग बैंक
को किसी न्यास या विश्वी वंधात्र की वाचित धारक के ऊपर पूर्ण
प्रधारण करने से भिन्न प्रधारण की, भले ही उसको उसकी सूचना हो,
मान्यता देने के लिए बाध्य या विवर नहीं किया जाएगा।
- (ख) उग विनियम (१) के उपरन्थी पर प्रतिकूल प्रभाव दाले बिना
लघु उद्योग बैंक, प्रत्युप्रत के तोर पर भी धारने किसी वायित्य
के विना, स्टाक के हप ने निर्गमित किसी बंधपत्र के पारक द्वारा, स्टाक
के व्याज पर या परिवर्तन। मूल के संदर्भ या स्टाक के अनुरोध या उसके
संबंध में ऐसी खातों पर नियंत्रण लिये लघु उद्योग बैंक उचित समझे, प्रपनी
वहियों में प्रभिलिखित कर सकेगा।
५. न्यासियों और पदधारकों द्वारा स्टाक प्रमाणपत्र के हप में निर्गमित
बंधपत्र धारण करने के लिए उपरन्थी—(१) कोई पदधारक स्टाक प्रमाण-
पत्र के हप में कोई बंधपत्र—
- (क) ग्राने बैंद्यविक नाम में, जिसका लघु उद्योग बैंक की वहियों
प्रीर स्टाक प्रमाणपत्र में न्यासी के हप में बर्णन है, उसके
प्रावेदन में विनियोग न्यास के न्यासी के हप में या किसी
ऐसी यहुता के बिना न्यासी के हप में, या
- (ख) भाने पद के नाम में,
धारण कर सकेगा।
- (ख) उस अविक्षित द्वारा जिसके नाम में बंधपत्र है, लघु उद्योग बैंक
द्वारा अविक्षित प्रक्रियों में लघु उद्योग बैंक को किए गए लियत प्रावदन
पर भी बंधपत्र के प्रस्तरण पर लघु उद्योग बैंक—
- (ग) उग धारनी वहियों में किसी विनियोग न्यास के न्यासी के
हप में या किसी न्यास के विनियम के बिना न्यासी के हप
में प्रविटिट गर गयेगा भी वायित्य, न्यास के विनियम
के माध्य या विनियम के बिना, न्यासी हेतु हप में उलिखित
उसके नाम में स्टाक प्रमाणात्र जारी कर सकेगा, या

- (viii) उसे उसके पद नाम से स्टाक प्रमाणपत्र जारी कर सकेगा और उसे प्रगांठन बहियों में, प्रावेदक के प्रत्युषोध के प्रत्युमार उसके पद नाम से स्टाक के धारक के हृषि में उल्लिखित करते हैं। प्रविष्ट कर सकेगा, परन्तु यह तब जब --

 - (i) उक्त प्रत्युषोध इस विनियम के उप विनियम (1) के आवधी के प्रत्युरूप है,
 - (ii) उप विनियम (2) के विवरणों के प्रत्युमार लघु उद्योग वैदि द्वारा प्रोत्साहित प्रावश्यक मालाय पथ कर दिया गया है।
 - (ii') यदि, व्यवस्त्र व्यवसाय के हृषि में है तो वह लघु उद्योग वैदि के नाम प्रत्याकृत कर दिया गया है और यदि व्यवस्त्र स्टाक प्रगाणपत्र के हृषि में है तो उसकी रजिस्ट्री-कूट धारक द्वारा प्रहृष्ट X में रखी द दी गई है।

(3) उप विनियम (1) के अधीन स्ताक प्रमाणापव पदधारक ढारा या तो अकेले या, प्रथम व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ या विस्तीर्ण पदधारण करने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप से धारित किया जा सकता ।

(१) जब स्टाक रिंगों व्यक्ति द्वारा प्रयत्ने पद के नाम में धारित किया जाता है तब संवैधित स्टाक प्रमाणपत्र से संवैधित कोई दस्तावेज़ उस समय उम नाम से, जिसमें स्टाक प्रमाणपत्र धारण किया जाता है, पर धारण करने वाले व्यक्ति द्वारा नियादित किया जा सकेगा भानो उसका बैंपरिशक नाम इस प्रकार कहित है।

(5) जहाँ लघु उद्योग बैंक को बहियों में न्यासी या पदधारक के रूप में उत्सवित स्टाक प्रमाणपत्र धारक द्वारा निष्पादित किया गया तात्पर्यित कोई भ्रंतरण विलेख, मुक्तारनामा या अन्य दस्तावेज लघु उद्योग बैंक को पेश किया जाता है वहाँ लघु उद्योग बैंक को इस बात की जांच करने की प्रावधानकता नहीं होती कि बया स्टाक धारक किसी न्यासी या दस्तावेज या नियमों के नियंत्रणों के घटीत कोई ऐसा प्रहितार देत या ऐसा विलेख या अन्य दस्तावेज निष्पादित करने का हकदार है, और ऐसे, भ्रंतरण-विलेख, मुक्तारनामे या दस्तावेज पर उसी प्रकार कार्य कर सकेगा मानो निष्पादक न्याक प्रमाणपत्र धारक है, और चौहे भ्रंतरण विलेख, मुक्तारनामे या दस्तावेज में स्टाक प्रमाणपत्र के धारक को न्यासी या पढ़ धारक के रूप में उत्सवित किया गया हो या नहीं और चाहे उसका न्यासी या पदधारक की स्थानी हैंसियत से भ्रंतरण विलेख, मुक्तारनामे या दस्तावेज का निष्पादित करना तात्पर्यित हो या नहीं।

(6) इन विनियमों की किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह किसी न्यास पा किसी दस्तावेज या नियमों के अधीन किन्हीं न्यासियों या पद धारकों और हितविधायारियों को, न्यास गठित करने वाली लिखत के उपचरणों या उग संस्था के, जिसका स्टाक प्रमाणपत्र धारक पद का धारक है, नियमों को विधि के नियमों के अनुसार न करके अन्यथा कांय करने के लिए प्राप्तिकृत करता है और लघु उद्योग बेक प्रोट किसी स्टाक प्रमाणपत्र में कोई हित धारण या प्रभित करने वाला कोई व्यक्ति या कोई स्टाक प्रमाणपत्र धारक को किसी स्टाक प्रमाणपत्र के संबंध में लघु उद्योग बेक द्वारा रखे : ए किसी रजिस्टर में किसी प्रविष्टि के या स्टाक प्रमाणपत्र से संबंधित किसी दस्तावेज में किसी बात के कारण किसी न्यास पा किसी स्टाक प्रमाणपत्र धारक की वैश्वासिक वाध्यता की सूचना है।

(7) किसी व्यास द्वारा किसी पद के धारक के रूप में इस विनायम के अनुसरण में किए गए किसी प्रावेदन पर या किसी दस्तावेज पर जिसका निष्पादित किया जाना तात्पर्यत है, कायं करने से वृवं लघु उद्योग बैक यह साध्य पेश करने को अपेक्षा कर सकेगा कि ऐसा व्यक्ति उस पद का तेस्मय धारक है।

६. न्याय/न्यासों (न्यायियों) द्वारा वकत ग्रन्तों के रूप में नियंत्रित
अवधि धारण करने के लिए उपचय ---(1) विनियम ४ के उपनियमित
(1) के उपचयों पर प्रतिकृत प्रभाव इसे दिया, तथा उद्योग और प्रावेदक
के फलों पर आर एवं उद्योग विभाग के दिवित्व के द्वितीय, प्रावेदक,
किसी विनियोग स्थान या उम्म न्याय के न्यायी (न्यायियों) ये नाम ग
या प्रावेदक के दिवित्व नाम हैं, उसे उसके प्रावेदक में विनियोग स्थान
के न्यायी के रूप में या ऐसे विनियोगों के विनायासों के हाथ में, वकतवात
के रूप में काउंट द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं।

(2) वहाँ वनवाच के रूप में कोई विधाता, व्यापक के विषयीकृत नाम में है वहाँ सभु उद्योग बैंक, सभु उद्योग बैंक द्वारा अधिकृत प्रबन्ध में उसके द्वारा किए गए आवेदन पर तथा ऐसे विधाता के प्रब्लेम पर इन के उपायित्यम् (1) में अधिकृतिरूपी में वनवाच के रूप में संबंधित विधाता तिर्यकृत कर सकता, परन्तु यह नहीं जबकि—

(i) इसके उपर्याप्ति (6) के नियमों के प्रत्युत्तर सभु उद्योग वैक डारा प्रयोगित प्रावधान साध्य प्रस्तुत कर दिया गया है। और

(ii) बंधवत लघु उद्याग देक के पद्म मे पूष्टित कर दिया गया है।

(3) उप-विनियम (1) के प्रधान दण्डपत्र किसी ध्यास के ध्यासी द्वारा प्रकेले या उस ध्यास के ध्यामियों के स्वप्न किसी प्रत्येक व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त धारण किया जा सकेगा।

(4) जहाँ बंधपत्र के हप में कोई बंधपत्र न्यासी के हप में बंधाव धारक द्वारा पृष्ठाकृत किया गया तात्पर्यत है ये, जहाँ बंधपत्र धारक द्वारा निष्पादित किया गया कोई मुकारनामा या गम्भ इस्तावेज लघु उद्योग बंक में ऐसे किये जाते हैं वहाँ लघु उद्योग बंक को यह जान करने की प्राप्तशक्ति नहीं होती कि वहा बंधपत्र धारक किसी न्यासी या दस्तावेज या नियमों के नियंत्रणों के प्रधीन ऐसा पृष्ठाकृत करने या ऐसा मुकारनामा या गम्भ इस्तावेज निष्पादित करने का हकाराह है पीर पृष्ठाकृत, मुकारनामे या बंधपत्र पर उसी रोति से कार्य कर सकेगा मानो ऐसा पृष्ठाकृत बंधपत्र धारक है पीर चाहे बंधपत्र। धारक पृष्ठाकृत, मुकारनामे या दस्तावेज में न्यासी के हप में उल्लिखित हैं या नहीं और चाहे न्यासी को हैसियत में उमड़ा ऐसा पृष्ठाकृत करना या मुकारनामा या दस्तावेज निष्पादित करना तात्पर्यत हो या नहीं।

(5) इन विनियमों की किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह किसी घास या किसी दस्तबेज या किन्हीं नियमों के पध्दति किन्हीं भ्यासियों और हिताधिकारियों को घास को लाग होने वाले विधि के नियमों या घास गतिं करने वाली लिखत के निवधनों के अनुसार न करके प्रथम्या कार्य करने के लिए प्राधिकृत करती है।

(6) किसी व्यक्ति द्वारा किसी न्यास के न्यासी के लू में इस विनियम के अनुसरण में किए गए किसी प्रावेदन पर काये करते से पूर्व तपु उद्योग वैक यह गाथ्य पेश करते की प्रयंका कर मकेगा कि पेमा व्यक्ति उस न्यास का तत्समय न्यासी है।

7. व्यक्ति जो धारक होने के लिए निरहित हैः—कोई भी प्रबलस्क या कोई भी व्यक्ति जो सभी व्यायालय द्वारा विहृतचित् का पाया गया है वंधारों का धारक होने का हकदार नहीं होगा।

४. व्याज का सदाय—(1) बचतपत्र के रूप में बंधपत्र पर व्याज का संदाय, निर्गमन कार्यालय या बंधात्र प्रास्पेक्ट्यू में विनिविष्ट लघु उत्तोग बैंक के लिये द्वारा कार्यालय द्वाय बचतपत्र धारक द्वारा ऐसा धोखानाशिलतामा के पालन के अधीन रहते हुए विनकी नभु उत्तोग ये प्रवेश करें प्रारं बधपत्र के पेश किए जाने पर, विधा जाएगा।

(2) स्टाक प्रमाणात्र के रूप में वंधाव पर ध्याज का गंदगी, मैपने याके के साते में देख रखिए धाधाव जारी करके या ऐसी यथा रुचि में किया जाएगा जैसा लघु उत्तोग थैकट्राग विनिश्चित की जाए। ध्याज वे

सदाय के समय स्टाक प्रमाणपत्र देने की घटना नहीं की जाएगी किन्तु पांच बाला अधिपत्र के पीछे उसकी प्राप्ति प्रभिस्वीकार करेगा।

(3) लघु उद्योग बैंक की बहियों में प्रविहित के रूप में आखिर किसी वंशपत्र पर व्याज का सदाय लघु उद्योग बैंक द्वारा पांच बालों के बालों में देय निवारण प्रधिवित जारी करके या ऐसी प्रथ्य रीति में किया जाएगा जिसी लघु उद्योग बैंक द्वारा विनियित की जाए।

५. सदायपत्र के रूप में वंशपत्र के द्वारा जाने प्राप्ति पर प्रतिक्रिया :—
(1) किसी व्यापक के बारे में यह प्रधिवित होता है कि वह जो गया है, चोरी हो गया है, नष्ट हो गया है, संग्रह या तुलना विकृत प्रथवा विस्तृप्त हो गया है, उसके स्थान पर उसकी प्रतुलिपि जारी करने के लिए प्रावेदक पर विनियम कार्यालय की ओर जागा और उसमें निम्नलिखित विविहितों द्वारा, प्रार्थना :—

(क) लघु उद्योग लघु उद्योग विकास बैंक वंशपत्र का भवित्व से जाने वाले वंशपत्र में..... प्रतिक्रिया

(बांग)

(ग) निम्नलिखित विवित विषयों का सदाय किया गया है,
(ग) यह व्यवित विषयों उड़त व्याज का गदाय किया गया था,
(घ) वह व्यवित विषयों नाम से वंशपत्र निर्मित किया गया था (यदि जान हो),

(ङ) वंशपत्र के द्वारा जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत या विस्तृप्त हो जाने की परिस्थितियाँ, और

(च) लघु वंशपत्र के द्वारा जाने या चोरी हो जाने की रिपोर्ट पुनिम से की गई थी।

(2) ऐसे प्रावेदनपत्र के साथ निम्नलिखित भेजे जाएँ :—

(क) वहाँ वंशपत्र रजिस्ट्री डाक से प्रेसिन किए जाने के दोस्रान द्वारा गया या वहाँ वंशपत्र पर्सनलिट करने वाले पर की इकाइयर से प्राप्त रजिस्ट्री रिपोर्ट,

(ख) यदि जो जाने या चोरी हो जाने की रिपोर्ट पुनिम को दी गई हो तो पुस्तिकालिका की एक प्रति,

(ग) यदि प्रावेदक रजिस्ट्रीकृत धारक नहीं है तो मिस्ट्रेट के समय शापथ लिया गया ऐसा वंशपत्र जिसमें यह प्रतिक्रिया किया गया हो कि प्रावेदक वंशपत्र का प्रतिम विवित धारक है, और रजिस्ट्रीकृत धारक के हक का पता साजाने के लिए धावधक दस्तावेजी साझा, और

(घ) जो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विस्तृप्त वंशपत्र का कोई बचा हुआ भाग या टुकड़े।

10. राजपत्र में प्रधिसूचना :—वचनपत्र के हप में वंशपत्र या उसके हो जाने की प्रधिसूचना भारत के राजपत्र और उस स्थान के जहाँ वंशपत्र द्वारा गया या चोरी, नष्ट या विकृत या विस्तृप्त हो गया था, किसी स्वार्थी राजपत्र में, यदि कोई हो, मगातार तीन भ्रंकों में प्रावेदक द्वारा तुरंत प्रकाशित की जाएगी। ऐसी प्रधिसूचना निम्नलिखित प्रकाश में या उपर्याप्त रूप से होगी जो परिस्थितियों से प्रनुजात हो :—

..... प्रतिक्रिया वंशपत्र का लघु उद्योग विकास बैंक वंशपत्र से जो विस्तृप्त हो के नाम में है और प्रतिम बार थी व्यवितरी को पृष्ठांकित किया गया है जिसमें उपर्याप्ति प्रथ्य व्यवित के नाम कर्म पृष्ठांकन नहीं किया है वही गया है/चोरी हो गया है/नष्ट हो गया है/विकृत या विस्तृप्त हो गया

है, पर यह द्वारा यह मुख्यता दी जाती है कि नियम स्वार्थालय में उपर्युक्त वंशपत्र प्रावेदक पर संदेश व्याज का सदाय देकर किया गया है और इसके स्वतंत्रतारी के पाल में इसकी प्रतुलिपि जारी किए जाने के लिए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाने वाला है या किया गया है। बनता का यह विवादित हो जाती है कि ये उपर्युक्त वंशपत्र का वय या उगाए गए वंशपत्र प्रथ्यां कोई जेन-डेन न करे।

प्रधिवित दरने वाले व्यवित का नाम
विवादित
*जो सारा न हो उसे काट दे।

11. वंशपत्र की प्रतुलिपि जारी करना और उसके लिए प्राप्ति लेना :—

(1) विनियम 10 में विहित प्रतिम प्रधिसूचना के प्रकाशन के पश्चात् यदि विहित प्रधिवितरी का, वंशपत्र के द्वारा जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत या विस्तृप्त हो जाने के संबंध में और प्रावेदक के दावे के प्राप्तित्व के संबंध में नमाधारन हो जाता है तो वह वंशपत्र की विविहितियों को विनियम 13 के प्रधीन प्रकाशित मूली में सम्प्रसित कराएगा, प्रोग—

(क) यदि वंशपत्र का एक भाग ही जो गया है, चोरी हो गया है, नष्ट हो गया है, विस्तृप्त हो गया है, प्रारंभ यदि उसका कोई ऐसा भाग प्रेस किया गया है जो उसकी पहचान के लिए प्राप्ति लेने वाले वंशपत्र के नियादित किए जाने पर विनियम 13 के प्रधीन मूली के प्रकाशन के तुरंत पश्चात् या उड़त मूली के प्रकाशन की तारीख से ऐसी प्रधिवित की समाप्ति पर जो विहित प्रधिवितरी प्रावेदक का वंशपत्र समझे यह प्रादेता कि व्याज का संदाय किया जाए और और उस वंशपत्र के स्थान पर जिसका कोई भाग जो गया है, चोरी हो गया है, नष्ट हो गया है, विकृत या विस्तृप्त हो गया है, प्रावेदक को उसकी प्रतुलिपि जारी की जाए,

(ख) यदि इस प्रकार की गए, नष्ट हो गए, विकृत या विस्तृप्त वंशपत्र का कोई भी ऐसा भाग प्रेस नहीं किया गया है जो उसकी पहचान के लिए प्राप्ति लेने हो :—

(i) उड़त मूली के प्रकाशन के दो वर्ष के पश्चात् और इसमें याने विहित रीति में सतिरूपि वंशपत्र के नियादित किए जाने पर, इसमें याने विनियित वार वर्ष की प्रधिवित के समाप्ति होने तक, प्रावेदक को इस प्रकार जो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विस्तृप्त वंशपत्र की वार व्याज का संदाय किया जाए, और

(ii) उड़त मूली के प्रकाशन की तारीख से चार वर्ष के पश्चात् प्रावेदक को इस प्रकार जो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विस्तृप्त वंशपत्र की प्रतुलिपि जारी की जाए, परन्तु यह कि;

(1) यदि वह तारीख जिसको वंशपत्र प्रतिसंदाय के लिए शोध्य है उस तारीख से पूर्व एकी है जिसकी वार वर्ष की उड़त प्रधिवित नमाधार होता है तो विहित प्रधिवितरी, पृष्ठनं० १ से ६८ तक विवादित यदि विवित वंशपत्र के दावे के लिए प्राप्ति लेने वाले वंशपत्र के नियादित किए जाने पर यह वंशपत्र के दावे के लिए प्राप्ति लेने वाले वंशपत्र की वार व्याज का संदाय किया जाए उस समय पर संदाय करेगा वर व्याज की प्रतुलिपि प्रधिवितरी जारी की जाए

(2) यदि बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी किए जाने से पूर्व किसी भी समय मूल बंधपत्र मिल जाता है या निर्गमन कार्यालय को किसी समय कारणों से ऐसा प्रवान ढोना हो कि इसके विवरादित किया जाना चाहिए तो मामला विहित प्रधिकारी को साथे विचारार्थ निर्विचित किया जाना यांग इसीलिए इस प्रादेश पर गमी कारंबाट निवित कर दी जाएगी। इस उप विनियम के प्रधीन पारित प्रादेश उसमें उल्लिखित चार वर्ष की प्रवधि समाप्त होने पर अनियम हो जाएगा जब तक कि इस बांध उप प्रादेश को विवरादित या अन्यथा उत्तराधिन नहीं कर दिया जाता है।

(2) विहित प्रधिकारी किसी बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी करने के पूर्व किसी भी समय ददि इनके पास पदान्त बनाये हों इस विनियम के प्रधीन जारी किए गए अपने प्रादेश को परिवर्तित या इसके बारे में यह भी नियम दे सकता कि बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी करने के पहले का अन्तराल चार वर्ष से अनधिक गमी प्रवधि तक बढ़ाया जाए औ वह ठोकरायें।

(3) धनियतिवारी —

- (क) (i) जब उप विनियम (1) (क) के प्रधीन निष्पादित को जाएं तब प्रस्तुतिवारी व्याज की रकम की दुगुनी रकम के लिए प्रथमत उप बंधपत्र पर प्रोटोकूल शोध्य व्याज की समी पिछली रकम की दुगुनी रकम धन उग प्रवधि में, जो बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी करने के पूर्व अतीत होनी चाहिए, उप बंधपत्र पर प्रोटोकूल शोध्य व्याज की समी रकम की दुगुनी रकम के लिए होती, और
- (ii) अन्य सभी मामलों में बंधपत्र के अनियमित मूल्य की दुगुनी रकम धन बंधपत्र (1) के प्रनुलार मंगणित व्याज की रकम की दुगुनी रकम के लिए होती।

(ख) विहित प्रधिकारी यह नियम दे सकता कि गमी धनियतिवारी के बारे में आदेश द्वाया अवधारणा आवेदक या आने द्वाया अनुमोदित एक या दो एसे प्रतिमुद्राओं द्वाया जिन्हें वह उचित मामले नियमित की जाएंगे।

12. स्टाक प्रमाण पत्र के रूप में बंधपत्र के द्वो जाने आदि पर प्रक्रिया:— (1) किसी ऐसे स्टाक प्रमाण पत्र के स्थान पर विस्तके बारे में यह प्रधिकारी हो कि वह द्वो गया है, और हो गया है, प्रथमत: या पूर्वतः विहित प्रधारणा द्वाया हो गया है, उसकी प्रनुलिपि जारी करने के लिए प्रत्येक आवेदन निर्गमन कार्यालय को भेजा जाएगा और उसके साथ निम्नलिखित भेजे जाएंगे,

- (क) यदि स्टाक प्रमाण पत्र रजिस्ट्री डाक से प्रेतित किए जाने के दोगान द्वो गया है तो स्टाक प्रमाण पत्र प्रतिवाट करने वाले पत्र की डाक घर से रजिस्ट्री रेस्ट्री,
- (ख) यदि स्टाक प्रमाण पत्र के द्वो जाने या चाही हो जाने की लिंगटे पुलिम में की गई हो तो पुलिम लिंगटे की एक प्रति,
- (ग) परिस्ट्रेट के गमध्र निया गया ऐसा बंधपत्र विषमेवह प्रयागित किया गया है ति आवेदक रजाइ गुमाण पत्र का नियम धारण है और ति स्टाक प्रमाण पत्र न तो उसके कठज्ञे न हो तो उसके अंतर्गत किया है, तिक्की रखा है या अन्यथा उग पर कोई लेन देन किया है, और
- (घ) यांग, चारों हो गए, तद दो गए, विहित या विहित स्टाक प्रमाण पत्र के बांध दुए की भाग या टुकड़े।

(2) आवेदन में स्टाक प्रमाण पत्र के द्वो जाने की प्रवधितिवारी का वर्णन किया जाएगा।

(3) यदि विहित प्रधिकारी का स्टाक प्रमाण पत्र के द्वो जाने, चारों हो जाने, तद दो जाने, विहित या विहित हो जाने के बंधपत्र में मामलाने हो जाता है तो वह मूल प्रमाण पत्र के बदले में उसकी प्रनुलिपि जारी करने का नियम देगा।

13. मूची का प्रकाशन — (1) विनियम 11 में विहित मूची भारत के राजवाल में अवैदावित रूप में जनवरी और जुलाई में या उसके पश्चात मुद्रिवाद्यार शीघ्र प्रकाशित की जाएगी।

(2) गमी बंधपत्र विनियम 11 के प्रधीन प्राचित किया गया है ऐसे प्रादेश पारित किए जाने के प्रधारण प्रधारण होनी वाली पहची मूची में गमिलित किए जाएं और उनके बनाये जाने वाले बंधपत्र प्रदेशक उत्तरवर्ती मूची में तब तक मामलित किए जाने रखें जब तक कि प्रथम प्रधारण की नारीय से चार वर्ष तक प्रवधि माना जाए।

(3) मूची में गमिलित किए गए प्रत्येक बंधपत्र के गवध में निम्नलिखित विशिष्टियों दी जाएंगी, प्रथात निर्गमन का नाम, बंधपत्र का मध्यांक, उसका मूल, उस व्यक्ति का नाम जिसे वह निर्गमित किया गया था, वह तारीख विस्तके उप पर व्याज लगेगा, प्रनुलिपि के लिए आवेदक का नाम, विहित प्रधिकारी द्वाया व्याज के संदाय पर प्रनुलिपि जारी करने के लिए पारित प्रादेश का संक्षयक और तारीख और उस मूची के प्रकाशन की तारीख विस्तके उप पर बंधपत्र पहची द्वाया समिलित किया गया था।

14. लघु उद्योग बंक का विवेकाधिकारी:— विनियम 10, 11, 12 और 13 में किसी बात के होते हुए भी, जहां लघु उद्योग बंक किसी मामले में ठीक समझना है वहां बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी करने के संबंध में उसमें विहित प्रतिया से प्रभिमुकि देना और धनियतिवारी के बारे में ऐसे नियमित होने पर, जो वह ठीक समझे, या प्रथात बंधपत्र की प्रनुलिपि जारी करना लघु उद्योग बंक के लिए विविध पूर्ण होगा।

15. विहित बंधपत्र का ऐसे बंधपत्र के होते हुए में प्रधारण जिसकी प्रनुलिपि का जारी किया जाना चाहिए है:— विहित प्रधिकारी का यह विकल्प होता कि वह किसी बंधपत्र को, जो विहित या विहित हो गया है, ऐसे बंधपत्र के रूप में माने जिसकी विनियम 11 के प्रधीन प्रनुलिपि जारी किया जाना या विनियम 19 के प्रधीन मात्र नशीकरण प्रयोगित है।

16. बचनपत्र के रूप में बंधपत्र का नवीकरण कराने की कब प्रयोग का जा सकती:— (1) बचनपत्र के रूप में बंधपत्र के किसी धारक से नियमन कार्यालय द्वाया निम्नलिखित प्रधारणों में बचनपत्र का नवीकरण कराने के लिए उस पर एसो लिंगटे की प्रयोग की जा सकती, प्रथात:—

(क) यदि बंधपत्र के पांछे केवल एक और पृष्ठाकान के लिए ही प्रयोग स्थान बवा है या यदि कोई लघु बंधपत्र पर बनेपान पृष्ठाकान या पृष्ठाकानों के ऊपर लिखा गया है,

(ख) यदि निर्गमन कार्यालय की गय में बंधपत्र पटा दृपा है या किसी प्रधारण में नक्काश प्रस्तुत या लिकाई में भरा दृपा है या ठीक नहीं है,

(ग) यदि कोई लघु उद्योग बंक युक्ति नहीं है या यामिलित पात्र याले का या यान शालों के नाम नहीं दर्शाता है या बंधपत्र के पांछे के पृष्ठाकान शालों में से किसी एक शाल में न करके किसी और तर्फाले से लिया गया है,

(घ) यदि बंधपत्र पर व्याज दस वर्ष या उससे प्रधिक समय तक प्रनालित रहा है,

(३) यदि वधुत्व के पर्याप्त दिग् या व्याज के स्तम्भ पूरी तरह भर याएँ तो यह उस लाग्निक को जब व्याज के घटावण के लिए नियम लगाया जाता है। व्याज के पर्याप्त महिला याज उस घटावण के गांध में नहीं लगते, बिलकुल यह व्याज लाध्य ही याज है।

(च) यदि व्याज के नियम तीन वार मुख्यालित किए जाने पर व्यापक नियम लगाया के लिए प्रत्युत किया जाता है, प्राप्त-

(द) यदि नियम लगाया हो याज में व्याज के संदाय के लिए व्यापक प्रत्युत करने वाले व्यक्तित्व का हक प्रतियामित है या पूर्णतया लाग्निक नहीं होता है।

(२) जब वंशात वा नवीकरण करने के लिए मध्योध्या उप विनियम (१) के अधीन की गई है, तब उस पर याज संदेश व्याज का संदाय करने से तब तक इकार लिया जाएगा जब तक उस पर नवीकरण के लिए राष्ट्रिय नहीं लिया दी जानी है पौर वातावर में उसका नवीकरण नहीं कर दिया जाना है।

17. किसी मत एकमात्र धारक के बंधुपत्र पर किस व्यक्ति के हक को मान्यता दी जा सकेगा :—(१) किसी बंधुपत्र के मत एकमात्र धारक (जात यह इत्यु. ग्रन्थिग, पारसी हो या कोई प्रत्य) के निष्पादक या प्रणालीय या भारतीय उत्तराधिकार प्रधिनियम, 1925 (1925 का 39) के भाग 10 के प्रधीन उस बंधुपत्र की बाबत जारी किए गए उत्तराधिकार प्रमाणात्मक का धारक ही ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्हें नियमन कार्यालय द्वारा बंधुपत्र का हकदार होने की विहित प्रधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष प्रत्युदेशों के प्रधीन रहते हुए भाग्यता दी जा सकेगा।

(२) भारतीय संविदा प्रधिनियम, 1872 (1872 का 9) की पार्य 45 में किसी बात के होने हुए भी, जो या प्रधिक धारकों के नाम जारी किए गए, विषय किए गए या संदेश अभिनिर्धारित बंधुपत्र के सामने में प्रकाशित उत्तराधिकारी या एक से प्रधिक उत्तराधिकारी पौर प्रतियामिती या मत्य के प्रत्यात उसके निष्पादक, प्रणालीय या प्रत्य नोई व्याप्ति हो जो व्यापक या व्यापक उत्तराधिकार प्रमाणात्मक का धारक है, ऐसा व्यक्ति होगा जिसे नियमन कार्यालय द्वारा बंधुपत्र का हकदार होने की (विहित प्रधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष प्रत्युदेशों के प्रधीन रहते हुए) मान्यता दी जा सकेगी।

(३) नियमन कार्यालय ऐसे निष्पादकों या प्रणालीयों को मान्यता देने के लिए तब तक वापर नहीं होगा जब तक उन्होंने पथास्ति, भारत में किसी गतवर्त नवीकरण या कार्यालय से प्रोवेट या प्रणालीय प्राप्त नहीं किया है।

(४) उप विनियम (१), (२) पार (३) में विहित किसी बात के होने हुए भी, जहाँ विहित प्रधिकारी प्रत्येक से किसी मामले में शीर गमनता है वहाँ प्रोवेट या प्रणालीय पर्यावरण का विधिक प्रतिनिधित्व पर्यावरण का अधिकारी के गतवर्त नवीकरण का धारक होगा।

18. नामनिर्देशन —(१) विनियम 17 में किसी बात के होने हुए भी जहाँ कोई व्यापक पर्यावरण के प्रधिक व्यक्तियों द्वारा धारण किया जाता है वहाँ पथास्ति, प्रणालीय धारक या सभी धारक मिलकर किसी व्यक्ति या (हमें रजिस्ट्रेशन को लाग्निरेशन कर मकाने हैं जिन्हें, एकमात्र धारक की मृत्यु या नई धारकों की मृत्यु की दशा में बंधुपत्र पर शोध्य रकम का संदाय किया जा सकेगा।

परन्तु जब कोई व्यापक या प्रधिक व्यक्तियों द्वारा धारण किया जाता है तब नामनिर्देशनी सभी धारकों की मृत्यु पर ही रकम पाने का दावा किया जाता है।

परन्तु यह दावा किए गए विनियम को कोई बात किसी दावे पर प्रभाव नहीं लाने चाहती और व्यापक पर शोध्य विहित रकम की बाबत किसी वंशान्त्रे के सब धारक के लिये वालीत्वी रहती है।

(२) यदि उा विनियम (१) के प्रधीन दो या प्रधिक व्यक्ति नामनिर्देशन किए जाते हैं तो वंशान्त्रे पर शोध्य रकम नामनिर्देशन में विविदरूप रूप में विवरित की जाएगी, पौर में या नामनिर्देशन के व्यापक में रकम गर्भी नामनिर्देशन में वंशान्त्रे के विवरित की जाएगी।

परन्तु यदि कोई नामनिर्देशन विद्यमान नहीं है या प्रदि ऐसा नामनिर्देशन शोध्य रकम के केवल एक भाग के संबंध में है तो संपूर्ण रकम का या उसके उप भाग का विनियम नामनिर्देशन गंभीर नहीं है। गंदाय विनियम 17 के उपर्यामियम (२) के प्रधीन उपरे हकदार व्यक्तियों को किया जाएगा।

(३) उप विनियम (१) के प्रधीन कोई नामनिर्देशन, व्याप्तिश्विनी एक मात्र धारक या सभी धारकों द्वारा विनियम XV में किया जा सकेगा।

(४) ऐसे वंशान्त्रे की बाबत ही नामनिर्देशन किया जा सकेगा और धारक की वंशितक हैसियत में धारित है, पौर किसी एवं से धारक के हक में किसी प्रतिनिधिक हैसियत में या प्रभाव नहीं किया जा सकेगा।

(५) जहाँ नामनिर्देशी प्रबद्धक है, वहाँ पथास्ति, एकमात्र धारक या सभी धारक मिलकर किसी व्यक्ति को (जो प्रबद्धक नहीं है) नामनिर्देशी की प्रबद्धसत्ता के दोहरान बंधुपत्र पर शोध्य रकम प्राप्त करने के लिए नियुक्त कर सकेंगे।

(६) जहाँ कोई बंधुपत्र किसी प्रबद्धक के नाम में धारित है, वहाँ नामनिर्देशन यदि कोई हो, प्रबद्धक की धीर से कार्य करने के लिए विधि पूर्ण रूप से हकदार किसी व्यक्ति द्वारा किया जाएगा।

(७) कोई नामनिर्देशन भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक के बंधुपत्र के साथ प्रवृप्त XV में कोई प्रावेदन प्रस्तुत करके प्रतिस्थापित किया जा सकेगा या प्रवृप्त XVI में कोई प्रावेदन प्रस्तुत करके एवं किया जा सकेगा।

(८) कोई नामनिर्देशन या किसी नामनिर्देशन का कोई प्रतिस्थापन या रद्दकरण लघु उद्योग बैंक की विहितों में रजिस्ट्रीकूल किया जाएगा पौर रजिस्ट्रीकरण का तथ्य बंधुपत्र पर लिखा जाएगा पौर ऐसे रजिस्ट्रीकरण पर, पथास्ति, उक्त नामनिर्देशन, रद्दकरण या प्रतिस्थापन उस तारीख से प्रभावी समस्त जाएगा जिसको यह प्रस्तुत किया गया था।

(९) इस विनियम के प्रधीन सम्पर्क रूप में किए गए पौर रजिस्ट्री-हृत किए गए किसी नामनिर्देशन के प्रधीन बंधुपत्र के संबंध में उन प्रधिकारों पर जो किसी नामनिर्देशी ने प्रवित किए हैं, बंधुपत्र की प्रनतिपति के जारी किए जाने के कारण प्रधारण नहीं पड़ेगा पौर नामनिर्देशी को बंधुपत्र की प्रनतिपति के संबंध में वही प्रधिकार होंगे जो उसके मूल बंधुपत्र के संबंध में थे।

19. नवीकरण प्रादि के लिए रसीद :—(१) विहित प्रधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष प्रत्युदेशों के प्रधीन रहते हुए, धारक के प्रावेदन पर नियमन कार्यालय पर्यावरण से प्रदेश से—।

(क) धारक द्वारा बचनपत्र या बचनपत्रों के हक में बंधुपत्र या बंधुपत्रों के परिवर्त कर दिए जाने पर प्राप्त विनियम दावे के द्विचित्य के संबंध में नियमन कार्यालय का समाधान कर देने पर, बचनपत्र या बचनपत्रों का नवीकरण, उप विभाग या समेकन कर मकाने, परन्तु यह तब जब कि बचनपत्र या बचनपत्रों पर, पथास्ति, प्रस्त॑ I, II या III में रसीद लिया दी गई है, या

(ख) बचनपत्र या बचनपत्रों को इटाक प्रमाणात्मक या इटाक प्रमाणात्मकों में संपर्कित कर मकाना परन्तु यह तब जब कि बचनपत्र या बचनपत्रों पर नियनतिपति प्राप्तिपति कर दिया गया है :—“भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की संदाय कर” या

- (ग) स्टाक प्रमाण पर या स्टाक प्रमाणात्मकों का नवीकरण, उप-विभाजन या समेकन वर सकेगा परंतु यह तब जब कि स्टाक प्रमाणात्मक या स्टाक प्रमाणात्मकों पर, याचार्यति, प्रश्न VI, VII औ VIII में स्वीकृत किया दी गई है, या
- (घ) स्टाक प्रमाणात्मक या स्टाक प्रमाणात्मकों को बंधावत् या बंधावतों में संविहित वर सकेगा परंतु यह तब जब कि स्टाक प्रमाणात्मक या स्टाक प्रमाणात्मकों पर प्रश्न IX में स्वीकृत किया दी गई है,
- (इ) एक विधावा के बंधावों से दूसरा श्रृंखला के बंधावों में संविहित वर सकेगा, परंतु यह तब जब कि
- श्रृंखलात्मकों का परम्परा संविहित अनुचय है, यार्।
 - ऐसे नियमित तो शामिल करने वालों जनों का पालन किया गया है।
- (2) नियमन कार्यालय विद्वित प्रधिकारी के प्रादेशों के प्रधीन उप-विनियम (1) के संधान तिसी बंधपत्र का नवीकरण, उप-विभाजन या समेकन घोटे के लिए, प्रावेदक से, विहित प्रधिकारी द्वारा प्रतुमोहित एक या प्रधिक प्रतिभूति महित प्रश्न IV में क्षतिरूप निष्पादित करने को प्रोत्ता वर सकेगा।
20. हर के मरव ने विद्वाद संसार में बंधाव का नवोदयन :— वहाँ तिसी बंधाव के हर के मरव में, विहित नवीकरण के लिए कोई प्रावेदन किया गया है, कोई विद्वाद है वहाँ विद्वित प्रधिकारी :
- (अ) वहाँ विद्वाद के तिसी प्रधावार ने सधाव प्रधिकारिता वाले तिसी न्यायालय से ऐसे बंधपत्र का हक्कावार होने का प्रतिप विनियम विभाजन कर दिया है वहाँ ऐसे प्रधावार के पालन में नवोदय बंधपत्र नियमित कर सकेगा, या
- (ब) जब वह ऐसा विनियम विभिन्नात्मक गहरी वर सकेगा तो वहाँ विद्वित प्रधिकारी का नियमालय करने से हँसार कर सकेगा।

मार्गदर्शन

इस विधाव के प्रादेशों के लिए "प्रतिप नियंत्र" पद से ऐसा विनियम विभिन्ने हैं जो प्रधीनीय नहीं है या जो प्रधीनीय है इन्हें विहित विद्वित द्वारा प्रतुमोहित प्रधिक को प्रोत्ता वर सकेन्द्रीय प्रधीनीय नहीं को गई है।

21. नवोदय बंधपत्र के संवेदन में वायित्र प्राप्ति :— जब किसी व्यक्ति के पालन में विनियम 11 के प्रधीन बंधपत्र की प्रतिप जारी कर दी गई है या भवांडह बंधपत्र नियमित कर दिया गया है या विनियम 19 के प्रधीन उप-विभाजन या समेकन होने पर तब वायित्र नियमित कर दिया

प्रश्न I [विनियम 19(1)(क) रेखे]

वचनपत्र के हर में बंधपत्र के नवीकरण के लिए पृष्ठांत का प्रश्न
इसके वरने मार्गदर्शन लघु उद्योग विकास वैदेय

(स्थान)

सदैय नवोदय वचनपत्र प्राप्त किया।

प्रारक के/— के सधाव का प्रश्न से प्राविहित प्रतिनिधि के हक्कावार
(प्रारक का नाम)

प्रश्न II [विनियम 19(1)(क) रेखे]

वचनपत्र के हर में बंधपत्र के उप-विभाजन के लिए पृष्ठांत का प्रश्न
इसके वरने में भारतीय लघु उद्योग विकास वैदेय

(स्थान)

क्रमशः— अपाए के लिए

धारक के/— के सधाव का से प्राविहित प्रतिनिधि के हक्कावार
(धारक का नाम)

यथाहृत इस प्रकार नियमित बंधपत्र के लिए में उपलब्ध जाएगा कि यह लघु उद्योग वैदेय और ऐसे व्यक्ति योर् तत्त्वज्ञात् उसकी मार्कें इक प्राप्त करने वाले गर्वी विविधों के बीच एवं तब करार पठित जाएगा है।

22. उपोदय :— यह उपोदय वैदेय, परिवारात् वर्त गते तब बंधपत्र पर या उन बंधावों को बाबा या बिनो/बिनो स्वाम पर या प्रतुमोहित, नवोदय, उप-विभाजन या समेकन बंधाव, नियमित किया गया है। प्रियं गण है—

(ए) संवाद की दशा में उस तारीख से पार वर्ष यीत जाने के प्रवात, जिसको संवाद शोध या,

(घ) प्रतुमोहित बंधाव, की दशा में विनियम 13 के प्रयोग उन सूची के, जिसमें बंधाव का पद्धी वार उपलब्ध प्रकाशन की तारीख से, या विनियम 11 में उल्लिखित मूल बंधपत्र पर बाबा के संदाय योर् तारीख से, चार वर्ष, योत जाने के, प्रवात, जो भी तारीख याद की हो।

(ग) नवोदय बंधपत्र पर उप-विभाजन या समेकन होने पर नियमित किए गए बंधपत्र की दशा में, उसके नियमित को तारीख से बार वर्ष बोत जाने के प्रवात, उपोदय हो जाएगा।

23. व्याज की दातव उपोदय :— बंधपत्र के नियमितों में यहा प्रत्ययन रूप से उपर्युक्त के विवाएँ कोई भी व्यक्ति किसी त्रैसे बंधपत्र पर किसी प्रधिक की दातव, जो उन पूर्वान तारीख के प्रवात बीत गई है, जिसको ऐसे बंधपत्र पर योर्, राहम के संदाय के लिए मात्र भी जा सकती थी, व्याज या दाता जाने का हक्कावार नहीं होगा।

24. बंधपत्र का उपोदय :— (क) वर वदाता का हक्कावार प्रभागपत्र के स्वर्में आदित कोई बंधपत्र वृष्ट के लदार के लिए संधाय हो जाता है तब लघु उद्योग वैदेय के लिए आपतिय में जिसमें उस पर व्याज संदेय है या विनियम 1 कार्यालय में उसके पृष्ठ पर धारक द्वारा सम्बद्ध कर से इस्ताभर करके, प्रलूब किया जाएगा।

(ब) वर दाते में तिसी प्रविहित के भा में कोई बंधपत्र मूल के संदाय के लिए सोन्न हो जाता है तब प्रश्न XIV में सम्बद्ध रूप से हमागरित रसीद यारक द्वारा फिराव कार्यालय को हो जाएगी।

25. लघु उद्योग वैदेय की धारा से जाहिरों का प्रयोग :— लघु उद्योग वैदेय 4(2), 5(2), 5(7), 6(6) और 8(1) के प्रधीन प्रयोक्तव्य जाहिरों का लघु उद्योग वैदेय की धारा से प्रयोग लघु उद्योग वैदेय वैदेय की धारा से प्रयोग विभिन्नि में कार्यालय के लिए या महा प्रबंधन द्वारा दिया जा सकता है।

प्रत्युम्बोद्धव

उपलब्ध वैदेय द्वारा दिया गया

(धारक का नाम)

रक्षा III [विनियम 19(1)(क) देखें]

वंशावल के कार में वंशावलों के समेतन के लिए पूँछांकन का प्रक्रम

इसके बारे में भारतीय लघु उद्योग विहास बैंक-----द्वारा सेवा द्वारा निर्मित गिरि जाने के लिए प्रोत्तिक्षण
(स्थान)

प्रस्तुत वस्तुकार (पांचों) का/के संकायों प्रीर रक्षा (रक्षणों) का उल्लेख करो हृषीता विधि को विनियमित करो । १९८४ वा १९८५ में वंशावल के लिए प्राप्ति
माप समेतन द्वारा-----शहर के लिए -----रो सेवा द्वारा वंशावल प्राप्ति किया ।

(धारक का नाम)

धारक दे/-----के सम्पूर्ण क्षमता से प्राप्तिक्षण प्रतिनिधि के द्वारा द्वारा ।
(धारक का नाम)

प्रक्रम IV [विनियम 19(2) देखें]

यह सद को जात हो हि हम-----जो श्री-----का युवा प्रीर-----
(मुक्त वंशावल धारक का नाम)

निवासी है श्री-----जो श्री-----का युवा प्रीर-----
(प्रतिभूति सं. 1)

युवा प्रीर-----का निवासी है तथा-----
(प्रतिभूति सं. 2)

जो श्री-----का युवा प्रीर-----निवासी है, इसके द्वारा प्राप्ति को प्रीर हम में से प्रत्येक हमारे प्रीर हमारे वारियों, निष्ठावालों, प्रशासकों प्रीर प्रतिनिधियों में से प्रत्येक को प्रीर उन गव को
संप्रक्षतः प्रीर पूँछांकन भारतीय लघु उद्योग विहास बैंक विविध वर्ष, 1989 के अधीन यथा स्थापित भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक को (विसे इसमें आगे
“उत्तर लघु उद्योग बैंक” कहा गया है) उके वर्षावालों, उत्तरवर्षावालों प्रीर सम्मुद्रेशियों को-----गाए की याचि के संदर्भ के लिए
प्राप्ति करते हैं ।

प्रीर में/हवाओं से प्रत्येक-----उत्तर लघु उद्योग बैंक के साथ प्रत्येक विवाह करता
(मुक्त वंशावल धारक) प्रीर (प्रतिभूति/प्रतिभूति का/के नाम)

है/होते हैं कि यदि इन जातता या इनके निवास जर्न के संबंध में होई वाद लवान्ड/मूर्ह उत्तर न्यायालय के यद्योनस्त्र किसी न्यायालय में जाया जाता है
तो यह उत्तर लघु उद्योग बैंक को प्रेणा पर ऐसे वाद में जाहे कोई भी वक्तव्य यों न हो, उत्तर लघु उद्योग विकास बैंक में हिसों को भेज दिया जाएगा प्रीर उत्तर/
उत्तरों अन्तर्भाग गृह मिलित भविकारिता में लवान्ड/मूर्ह में विवाह उत्तर लघु उद्योग बैंक द्वारा निर्मित

उत्तर-----ने उत्तर लघु उद्योग बैंक को इसी प्रतिभूति में उल्लिखित उत्तर लघु उद्योग बैंक द्वारा निर्मित
(मुक्त वंशावल धारक का नाम)

विवाह (पांचों) के नवाहारण/नमेतन/उत्तरविवाह के लिए प्रावेदन निरा है ।

प्रीर उत्तर लघु उद्योग बैंक उत्तर-----के दो प्रचडे प्रीर प्राप्ति प्रतिभूति महित इसके नामे लिखा जाने
(मुक्त वंशावल धारक)

के पर्याप्त रहो हृषी उत्तर वंशावल करने और निरावित करने पर उत्तर विवाह को संभाल करने के किए सम्मत प्रीर सम्मत ही यथा है :

प्रीर उत्तर लघु उद्योग बैंक उत्तर-----उत्तर-----के प्राप्ति पर
(प्रतिभूति/प्रतिभूति का/के नाम) ,
(मुक्त वंशावल धारक)

के लिए प्रतिभूति होने प्रीर उत्तर वंशावल निरावित करने में उत्तर-----
(मुक्त वंशावल धारक)

के जाप निर्मित होने के लिए सहमत ही गया है/हो गए है ।

उत्तर वंशावल को जर्न यह है कि यदि उत्तर लघु उद्योग बैंक द्वारा निर्मित वंशावल
(वंशावल) का उत्तर पर लिखी जाता तो हल्लार होने का जाता होते बाते मरी अस्तित्वों प्रीर उत्तर वंशावल (वंशावल) का उत्तर के नवाहारण या उत्तर पर ज्ञात के नदाय के लिए अन्य अस्तित्वों के, जाहे कोई भी हो, जातों प्रीर मांसों तो प्रीर उत्तरे लिख जाते गये तो नवाहार, हानि, वर्ष, प्रमार प्रीर यथा से जो उत्तर लघु उद्योग बैंक को लिखा देने वाले या गांग के लिए या उत्तरे परिणामदाहा या उत्तरा नवाहार वंशावल (वंशावल) के निर्माता के कारण या उत्तर वंशावल (वंशावल) का नवाहार वंशावल (वंशावल) पर जोध्य लिखी जाते वंशावल के लिए उत्तरे पहुँचे या दागी होता पहुँचे उत्तर लघु उद्योग बैंक को सम्बन्धित प्रीर उत्तरे पर ज्ञात के नवाहार लिखा जाए तो उत्तर लघु उद्योग बैंक को सम्बन्धित प्रीर का

(प्रतिभूति/प्रतिभूति का/के नाम) (प्रतिभूति/प्रतिभूति का/के नाम)

उत्तरे वंशावल, प्रसादक या प्रतिनिधि या उत्तरे से कोई या प्रत्येक, इनका प्रत्युत्तियों में उल्लिखित उत्तर लघु उद्योग बैंक द्वारा निर्मित वंशावल
(वंशावल) का उत्तर पर लिखी जाता तो हल्लार होने का जाता होते बाते मरी अस्तित्वों प्रीर उत्तर वंशावल (वंशावल) का उत्तर के नवाहारण या उत्तर पर ज्ञात के नदाय के लिए अन्य अस्तित्वों के, जाहे कोई भी हो, जातों प्रीर मांसों तो प्रीर उत्तरे लिख जाते गये तो नवाहार, हानि, वर्ष, प्रमार प्रीर यथा से जो उत्तर लघु उद्योग बैंक को लिखा देने वाले या गांग के लिए या उत्तरे परिणामदाहा या उत्तरा नवाहार वंशावल (वंशावल) के निर्माता के कारण या उत्तर वंशावल (वंशावल) का नवाहार वंशावल (वंशावल) पर जोध्य लिखी जाते वंशावल के लिए उत्तरे पहुँचे या दागी होता पहुँचे उत्तर लघु उद्योग बैंक को सम्बन्धित प्रीर होता है। प्रसादक वह दूर्गतन प्रदृढ़ प्रीर प्रसादक ज्ञात है ।

(प्रतिभूति/प्रतिभूति का/के नाम)

यह उत्तरविवाह में ज्ञातवाह लिए जाएं परिवाहत नियम ।

इति विद्युत प्राग्नवी

वंचात्र की प्रहा।	महाराज	निर्मला नारीव	राम
मोर वर्णन			
प्रक्षय V [विनियम १७ (१) (ग)]			
स्वतंत्रता का प्रकार			
मेर/हम— (धारक का/धारकों के नाम)	इसके द्वारा— प्रतिशत भारतीय लघु उद्योग विकास बोर्ड विवाह/ प्रतिशत स्वाक्षर में अप्पीलार्य दिया या गोपर उत पर ब्रांड्डा बोर्ड गढ़ा— प्रशासकीय विवाहितों को सदृश्यता और धनांशित करता है/हरे हैं और मेर/हम— प्रतिशत स्वाक्षर की उन सौमा तक विवाह रूप से स्वीकार करता है/हरे हैं जिन सौमा तक वह मुझे/हमें प्रतिशत दिया गया है।	एवं का गो— स्वाक्षर/ (वर्ण) उत्तरो/उत्तर विवाहकों उत्तरो/उत्तर विवाहकों का नाम	
*मेर/हम— (भारक का/भारकों के नाम)	इसके द्वारा प्रत्योग करता है/करते हैं यि भूजे/हमें इसके द्वारा प्रतिशत स्वाक्षर के धारक/धारकों के स्वाक्षर में सूमो/हरे रंगिन्दीहरा लिया जाने पर उत्ता स्वाक्षर प्रमाणात्र उत्ता तीव्रा उत विष मोमबत्ता वह भूजे/हमें धनांशित किया गया है मेरो/हमारे ताम में तीव्रा- हरे/संतुष्टिवित लिया गया।		
?मेर/हम— (धारक का/धारकों के नाम)	इसके द्वारा प्रत्योग करता है/करते हैं यि उत्ता धनांशित (धनांशितों) को द्वारे द्वाय तो उत्तरे प्रतिशत स्वाक्षर के धारक (धारकों) के स्वाक्षर में रंगिन्दीहरा लिए जाने पर उत्ता स्वाक्षर प्रमाणात्र उत्ता तीव्रा उत विष मोमबत्ता वह भूजे/हमें धनांशित किया गया है मेरो/हमारे ताम में तीव्रा- हरे/संतुष्टिवित लिया गया।		
स्वार्थी साध्य का भव्य मेर— (सार्वजनिक)	की आविष्टि ॥—	(वर्ण)	(भाव)
स्वार्थी ऊरु ते हस्तानार फिर्। (सार्वजनिक)			
भूतरक			
हता			
(अनारंभी)			
एवा			
उत्तर प्रतिशतों ने— *इस पैरो का तर प्रयोग किया जाता है जब प्रमाणपत्र का कोई प्रश्न प्रतिशत किया जाता है। **सार्वी के हस्तानार, उपजीविका, पता	तो उत्तरिति में हस्तानार लिए।		
प्रक्षय VI [विनियम १७ (१) (ग) विवेद]			
स्वाक्षर प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए पृष्ठांकन का प्रक्षय			
इसके बदले मे— भारतीय लघु उद्योग विकास बोर्ड— विवाहास बोर्ड—	के नाम मे— एक नवीकृत स्वाक्षर प्रमाणपत्र प्राप्त किया गया पर भारत भारतीय लघु उद्योग द्वाय संरेख होगा।		प्रतिशत
	(स्थान)		

गणितीय धारा/वर्ग से ग्राहित प्रतिविधि के हसायर

(राजिहरु का नाम)

प्रश्न VII [विनियम 19(1) (ग) देखें]

स्टाक प्रमाणन के उत्तराधिकार के लिए पूछाने का प्रक्रम

इस स्थान प्रमाण पत्र से-----के बदले में-----प्रतिशत भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश वंशावली-----के-----ए के प्रमाणपत्र प्राप्त किए

(वर्ष)

वित्त पर व्याज भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश

(स्थान)

द्वारा संदेश होगा।

रजिस्ट्रीहृत धारक/सम्पर्क इन से प्राप्ति
प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

(रजिस्ट्रीहृत धारक का नाम)

प्रश्न VIII [विनियम 19(1) (ग) देखें]

स्टाक प्रमाणन के उत्तराधिकार के लिए पूछाने का प्रक्रम

प्रतिशत भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश वंशावली-----ए के
(वर्ष)

स्टाक प्रमाणपत्र से-----प्रतिशत भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश वंशावली-----
(वर्ष)

का-----रप्ते का एक स्टाक प्रमाणपत्र प्राप्त किया वित्त पर व्याज भारतीय लघु उद्योग विकास
(स्थान)

रजिस्ट्रीहृत धारक/सम्पर्क इन से प्राप्ति
प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

(रजिस्ट्रीहृत धारक का नाम)

प्रश्न IX [विनियम 19(1) (प) देखें]

स्टाक प्रमाणन को वृच्छवालों में संवर्तितन के लिये पूछाने का प्रक्रम

इस स्थान प्रमाणन के बदले में प्रति यदवनवाच हरपे के-----दबनवाच, (वर्ष

हरपे के लिये) एक नया स्टाक प्रमाणपत्र प्राप्त किया वित्त पर व्याज भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश वंशावली-----द्वारा
(स्थान)

रजिस्ट्रीहृत धारक/सम्पर्क इन से प्राप्ति
प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

(रजिस्ट्रीहृत धारक का नाम)

प्रश्न X [विनियम 5(2) (घ) (3) देखें]

स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में निर्णीत व्यावर के नयोहरण को रतोद का प्रक्रम

इसके बदले में-----के पक्ष में-----हरपे के लिये-----प्रतिशत भारतीय लघु उद्योग विकास वैकाश वंशावली-----का एक नवीकृत स्टाक प्रमाणपत्र प्राप्त किया, वित्त पर व्याज भारतीय लघु उद्योग विकास

(वर्ष)

द्वारा संदेश होगा।

(स्थान)

(रजिस्ट्रीहृत धारक के हस्ताक्षर)

प्रस्ता एक [विनियम ३(अ) (ग) देखें]

बचनपत्र के हय में बंधपत्र को लघु उद्योग बैंक में बातें में प्रविष्टि में संपर्वित करने के लिये प्रध्येका

तारीख - 19-

सेवा में,

प्रबंधक,
बंधपत्र प्रनुभाग,
भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक,
मुम्बई/संचालक

महोदय,

विषय:—प्रतिवात भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक बंधपत्र, ——————(—शुल्कता)

हम पोषित करते हैं कि बचनपत्र (बचनपत्रों) के क्षम में निर्मित कुल—^{एस्पे} के अंकित मूल्य के भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक बंधपत्र जो इसके पीछे सूचीबद्ध किये गये हैं हमारी संतुति है और प्रतुरोध करते हैं कि लघु उद्योग बैंक द्वारा एवं जाने पाने बातें में हमारे नाम में प्रविष्टि के हय में उन्हें घाटन करने के लिये हमें प्रत्युत्तम किया जाए जिसके लिये हम इसके साथ लघु उद्योग बैंक के पक्ष में सम्बन्ध स्वरूप संसाधन बंधपत्र लिख अन्वित करते हैं। उत्तर अधिकारी का/उत्तर अधिकारीयों के नाम, पदनाम और नमूना हस्ताक्षर, जिसे/जिन्हें बाता संचालित करने के लिये प्राप्तिकृत किया गया है, इसके पीछे दिये गये हैं।

इस संदर्भ में हम सम्बन्ध स्वरूप स्टापित और प्राप्तको प्राप्तको के प्रतुतार निष्पादित किया गया प्राप्तके पक्ष में अतिपूर्ति विलेख इसके साथ भेज रहे हैं।

हम आपसे यह प्रतुरोध करते हैं कि लघु उद्योग बैंक में बातें के क्षम में बंद्राओं के भारण का प्रमाणपत्र और हमारी शुल्क का कालिक विवरण ऊपर दिये गये पते पर सम्बन्ध प्रतुक्तप में भेज दिया करें।

इप्या इस पत्र की पावती है।

प्रध्येका

रविस्ट्रीड्युक्ट भारक (धारकों)/या उसके सम्बन्ध क्षम के प्राप्तिकृत प्रतिविवित के हस्ताक्षर

रविस्ट्रीड्युक्ट भारक का/धारकों के नाम—

इसके साथ भेजे गये, बंधपत्र लिखों की सूची

नीचे दिये अंकित मूल्य (मूल्यों) में बचनपत्र

1. ——स्पे के लिये बंधपत्र लिकर सं. —— तारीख ——————(—शुल्कता)

2. ——स्पे के लिये बंधपत्र लिकर सं. —— तारीख ——————(—शुल्कता)

3. ——स्पे के लिये बंधपत्र लिकर सं. —— तारीख ——————(—शुल्कता)

बंधपत्र लिखों का कुल अंकित मूल्य —— स्पे

नमूना हस्ताक्षर —— एकल/संयुक्त/प्रत्येक या उत्तरवीची

नाम 1. —— पदनाम

2. —— पदनाम

पत्र

टेलीफोन —————— टेलेक्स ——————

प्रनृसनक : (1) —— स्पे के संरक्षित मूल्य के बंधपत्र लिकर

(2) अतिपूर्ति विलेख

प्रश्न XII [विनियम ३(३क)(८) देखें]

लघु उद्योग बैंक में खाते ने प्रविदि के काम में लघु उद्योग विकास बैंक में दाता विहा जारी करने के लिए प्रश्नावापन केवा में,

प्रबंधन,

संघात मन्त्रालय,

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक

मुख्यमंत्री/विधायक

महोदय,

विवर: ----- % भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक वंशावल (----- अंगठा)

इस आलोचा लघु उद्योग विकास बैंक में रखे गये खाते में प्रविदि के काम में लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा जारी किया गया पृष्ठि प्रमाणपत्र इसके साथ में रखे रखे हैं।

हमारा अनुरोध है कि लघु उद्योग विकास बैंक को लाभे विवे गवे घोरों के मनुसार वंशावल (वचनपत्रों) के काम में संपर्कित और भलतिल कर दिया जाये।

हमारा प्रदर्शन है कि इस संदर्भ में वंशावल विहा उत विकास को, जो भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक में रखे गए खाते में प्रविदि के काम में घासित रखे जाए है, भलिशेष रहम का/सो बाबत ताका धूति प्रमाणपत्र सहित हमारे ऊर दिये हुए एवं पैके रविस्तरी छाक द्वारा हमें भेजे जायें।

कृपया इस पर को पावतो हैं।

भवानीय

रविस्तरीकृत धारक (धारकों) या उस के सम्पर्क का वे प्राप्तिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रविस्तरीकृत धारक/धारकों के नाम-

विद्यमान धूति प्रमाणपत्रों के ध्योरं और वचनपत्रों की प्रवेशा

1. धूति प्रमाणपत्र सं. ----- तारीख ----- रपए (----- अंगठा)
2. धूति प्रमाणपत्र सं. ----- तारीख ----- रपए (----- अंगठा)
3. धूति प्रमाणपत्र सं. ----- तारीख ----- रपए (----- अंगठा)

बंधपत्रों का युल अंकित मूल्य ----- रपए है जिसके लिए नीचे कथित अंकित मूल्य में बंधाव लिया जारी करने की व्यवस्था करें।

अंकित मूल्य	संदर्भ	युल अंकित मूल्य
(1) प्रत्येक 1,000 रपए का		रपए
(2) प्रत्येक 10,000 रपए का		रपए

हमारा भन्नरौप है कि बंधावों की भलिशेष रकम भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक में रखे गए खाते में प्रविदि के काम में घासित रहने दी जाए।

प्रश्न XIII [विनियम ३(३क)(८) देखें]

लघु उद्योग बैंक में खाते में प्रविदि के काम में बंधपत्रों के भलतरण का प्रस्तु

हम, ----- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक में खाते में प्रविदि के काम में बंधपत्रों के धारक (धारकों) का हस्तियत में ----- रपए की सीमा तक, जो हमारी संपूर्ण बंधपत्र धूति/उतका भाग है, मपनी धूति उस पर ----- तक प्रोटमूल डाक राखा ----- रपए की सीमा तक, जो हमारी संपूर्ण बंधपत्र धूति/उतका भाग है, मपनी धूति उस पर ----- तक को ध्योर उसके पक्ष में इसके द्वारा समनुदेशित धोर भलतरित करते हैं।

इस तरीके द्वारा नाम को मंत्रण गिराई हुये से स्वीकार वर्तते हैं।

भारत 1999 की तारीख के दिन से हम हस्ताक्षर वर्तते हैं।

उत्तर (पिंडिया) द्वारा उत्तराधिकार में हस्ताक्षण

दिल्ली (किंवा) द्वारा उत्तराधिकार में हस्ताक्षण

टिलापिया (उत्तराधिकारी वह नियामित किया जाए कि भारतीय राज्य प्रतिनिधि द्वारा व्यवासंबंधित) नियोग स्थान प्रतिनिधि, 1899 के अनुसार
उपर्युक्त नियोग स्थान विनाई जाएगी।

प्रश्न XIV [प्रांगण्य 14 (य) देख]

उपर्युक्त वेक में यात्रों में प्रदिविट के द्वारा घारित बंधपत्रों के उन्मोचन के प्रबल्प
सेवा में

प्रांगण्य

प्रधानमंत्री

भारतीय राज्यों विभाग वेक,

मुख्यमंत्री/प्रधानमंत्री

महाराष्ट्र,

विषय :- %भारतीय उपर्युक्त विकास वेक बंधपत्र (---खंडन)

(बंधपत्र धारक) के जमा वाते में भारतीय लघु उद्योग विकास वेक की वहियों में प्रदिविट के द्वारा में घारित अपनी वारियां दो मोदिसूल भारत सहित मूल रखम प्राप्त कीं। यह प्रमाणित किया जाता है कि बंधपत्र (बंधपत्रों) का प्रतिनिधि रकम और परिपत्रता की तारीख वहाँ प्रारंभिक भारत की रखम मेरी/हमारी वहियों से मेल जाती है।

अवर्द्धन,

रजिस्ट्रीकृत धारक (धारकों) या उत्तरके सम्बन्ध
स्पष्ट से प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रीकृत धारक का/धारकों के
नाम ---

तारीख ---

स्थान ---

प्रश्न XV (प्रांगण्य 15 देख)

नामनिश्चय/नामनिरेखन के प्रतिभापन का प्रबल्प

1. मे/हर (धारक का/धारकों के नाम) ---निम्नलिखित व्यक्ति (व्यक्तियों) को ऐसे घावित (व्यक्तियों) के हर में नाम-

निर्दिशित करता है/रखत है विषेशित है/मेरी/हमारी प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री धारक की मृत्यु की दशा में अंतिम विनिरिट बंधपत्रों पर शोषण रखम का संदाय किया जाएः

बंधपत्र

ब्रम सं.	वर्णन	गुणित संदर्भ	नियोग तारीख	प्राप्ति सूच्य
1.				
2.				
3.				

नामनिर्देशित:

नाम	पता	जन्म दिन (यदि नाम निर्देशितों में से एकम पा. दर्शन (यदि अवश्यक है)
1.		
2.		
3.		

* २ * इस पते, -----पर नामनिर्देशितों अवश्यक है/हैं। इस लिए मे. था/अमरी/इमारी -----को ऐसे नामनिर्देशन (नामनिर्देशितों) को अवश्यकता के दरीत मेरो/हमारो/मवश्यक धारक को नुस्खा हूँ। उनों को दसा में उप/उन पर शोध्य रकम प्राप्त करने का लिए दर्शन का काम में विषयत बजाता हूँ/हैं।

* ३ * इस नामनिर्देशन मेरो/हमारे द्वारा -----सार्वज्ञ को किए गए और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की बहियों में दर्शन का काम में विषयत बजाता हूँ/हैं। नामनिर्देशन के प्रतिलिप्य पत में है जो इस नामनिर्देशन के अधिसूचनाएँ पर नहीं जाता।

नामितों के दर्शनादार प्राप्त ज्ञान

* ४ * (धारक के हस्ताक्षर)

स्थान:

सारिधः :

* इस स्थान पर प्रदर्शन नामनिर्देशितों को संदेश द्वारा रकम का प्रतिशत दर्शित करें।

* इस पते ले दाट दे जब नामनिर्देशन विरोधी अवश्यक के पक्ष में नहीं है।

* इस पते को काट दे जब नामनिर्देशन पहले लिए गए नामनिर्देशन के प्रतिलिप्यान में नहीं है।

* यदि काट देया/दिया अवश्यक के नाम में प्राप्ति है तो नामनिर्देशन अवश्यक को और से विविहुरं द्वा में हस्ताक्षर किये जाना चाहिए।

प्रक्रम XVI [विवरण 18 (7) देखें]

नामनिर्देशन को रद्द करने के लिए प्रक्रम

म/हग -----नामे विनिर्दिष्ट और -----को रजिस्ट्रेक्शन, बंधपद्धों की वारत
(धारक का/धारकों के नाम)
मेरो/हमारे द्वारा देख या -----के नामनिर्देशन को इसके द्वारा रद्द करता हूँ/करते हैं।
(सार्वज्ञ)

क्रम सं.	पता	मुद्रित संदर्भांक	निर्मन सारिधः	मक्किस मूल्य
1.				
2.				
3.				

स्थान

* (धारक के हस्ताक्षर)

सारिधः

(धारक का नाम)

नामितों के हस्ताक्षर द्वारा पते

- 1.
- 2.

* यदि अवश्यक निर्देशन के गाम में प्राप्ति है तो नामनिर्देशन का रद्दाधरण अवश्यक को और मे विधिपूर्ण द्वा में हस्ताक्षर किया जाना चाहिए।

प्राप्ति दिल्ली : नामनिर्देशन की आवाज है कि भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विकास बैंक ने 21 जून, 1990 के अपने द्वारा भारतीय या उद्योग विकास बैंक (अंतर्राष्ट्रीय नियन्त्रित और प्रबन्ध) विनियम, 1990 को अनुमोदन प्रदान किया है।

प्राप्ति, एग्र. अप्रवाय, प्रबन्ध नियम

प्रबन्धक (विधि)

SMALL INDUSTRIES DEVELOPMENT BANK OF INDIA (ISSUE AND MANAGEMENT OF BONDS) REGULATIONS, 1990

No. 3144 CAD.Bonds|General Regulations.—In exercise of the powers conferred by Section 52 of the Small Industries Development Bank of India Act, 1989 (39 of 1989), the Board of Directors of the Small Industries Development Bank of India, with the previous approval of the Industrial Development Bank of India, is pleased to make the following Regulations, namely :—

1. Short title and applications.—(1) These Regulations may be called the Small Industries Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1990.

(2) They shall apply to Bonds issued and sold by the Small Industries Bank under clause (a) of sub-section (1) of Section 15 of the Small Industries Development Bank of India Act, 1989.

2. Definitions.—In these Regulations, unless there is anything repugnant in the subject or context.

(a) "the Act" means the Small Industries Development Bank of India Act, 1989;

(b) "Bonds" means the Bonds issued and sold by the Small Industries Bank under clause (a) of sub-section (1) of Section 15 of the Act.

(c) "Small Industries Bank" means the Small Industries Development Bank of India established under the Act;

(d) "Defaced Bond" means a Bond which has been made illegible and rendered undecipherable in material parts and the material parts of a Bond are those where :—

(i) the number, the issue to which it appertains and the face value of the Bond, or payment of interest are recorded; or

(ii) the endorsement or the name of the payee is written; or

(iii) the renewal receipt or the memorandum of transfer is supplied;

(e) "Form" means a form as set out in the Schedule to these Regulations;

(f) "Lost Bond" means a Bond which has actually been lost and shall not mean a Bond which is in possession of some person adversely to the claimant;

(g) "Mutilated Bond" means a Bond which has been destroyed, torn or damaged in material parts thereof;

(h) "Office of Issue" means the office of the Small Industries Bank on the books of which a Bond is registered or may be registered;

(i) "Prescribed Officer" means the General Manager or such officers of the Small Industries Bank as may be authorised by the Board of Directors of the Small Industries Bank

for the purposes of Regulations 11, 12, 13, 15, 17, 19 and 20;

(j) "Stock Certificate" means a Stock Certificate issued under Regulation 3.

3. Form of the Bond and the mode of transfer thereof, etc.—(1) A Bond may be issued in the form of :—

(a) A promissory note payable to, or to the order of, a certain person; or

(b) Stock registered in the books of the Small Industries Bank for which Stock Certificates are issued.

(2) (a) A Bond issued in the form of a promissory note shall be transferable by endorsement and delivery like a promissory note payable to order.

(b) No writing on a Bond issued in the form of a promissory note shall be valid for the purpose of negotiation if such writing purports to transfer only a part of the amount denominated by the Bond.

(3) A Bond issued in the form of a Stock Certificate and registered in the books of the Small Industries Bank shall be transferable either wholly or in part by execution of an instrument of transfer in Form V. The transferor in such a case shall be deemed to be the holder of the Bonds issued in the form of Stock to which the transfer relates until the name of the transferee is registered by the Small Industries Bank.

(3A) (a) Notwithstanding anything to the contrary herein contained, the Small Industries Bank may at the request of the person entitled to the Bonds, issue Bonds in the form of an entry in an account to be maintained by the Small Industries Bank in the name of the person entitled to the Bonds.

(b) The Bonds may be so issued in the form of an entry in the books of accounts of the Small Industries Bank either initially at the time of subscription to the Bonds or subsequently by conversion of the Bonds issued either in the form of a promissory note or Stock.

(c) If a Bond has already been issued in the form of a promissory note, the Bond holder desirous of holding it in the form of an entry in an account with the Small Industries Bank shall make requisition in Form XI and surrender the Bond duly endorsed in favour of the Small Industries Bank for the Bond being held in the form of an entry in an account in the books of the Small Industries Bank.

(d) If the Bond has been issued in the form of Stock Certificate, the holder shall transfer the Bond in favour of the Small Industries Bank with a request that the Bond may be held in the form of an entry in an account to be maintained by the Small Industries Bank in the name of the holder.

(e) A person holding Bonds in the form of an entry in an account maintained by the Small Industries Bank may have the Bonds transferred or converted in the form of a promissory note or a Stock Certificate by making an application in Form XII.

(f) No fee is chargeable for issuing Bonds in the form of an entry in the account of the books of the Small Industries Bank or converting Bonds already issued either in the form of a promissory note or Stock in the form of an entry in the books of the Small Industries Bank or vice versa.

(g) Bonds issued or held in the form of an entry in the books of the Small Industries Bank shall be transferable by execution of an instrument of transfer in form XIII. The transferor in such cases shall be deemed to be the holder of the Bonds to which the transfer relates till such time the name of the transferee is entered in the books of the Small Industries Bank.

(4) (a) A Bond shall be issued over the signature of the Managing Director or in his absence by an Executive Director and/or a General Manager of the Small Industries Bank which may be printed, engraved, lithographed or impressed by such other mechanical process as the Small Industries Bank may direct.

(b) A signature so printed, engraved, lithographed or otherwise impressed shall be as valid as if it had been inscribed in the proper handwriting of the signatory himself.

(5) No endorsement of a Bond in the form of a promissory note or no instrument of transfer in the case of a Bond in the form of a Stock Certificate shall be valid unless made by the signature of the holder or his duly constituted attorney or representative inscribed in the case of a Bond in the form of a promissory note on the back of the Bond itself and in the case of a Stock Certificate on the instrument of transfer.

4. Trust not recognised.—(1) The Small Industries Bank shall not be bound or compelled to recognise in any way, even when having notice thereof, any trust or any right in respect of a Bond other than an absolute right thereto in the holder.

(2) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1), the Small Industries Bank may, as an act of grace and without liability to the Small Industries Bank, record in its books such directions by the holder of a Bond issued in the form of Stock for the payment of interest on, or of the maturity value of, or the transfer of or such matters relating to the Stock as the Small Industries Bank thinks fit.

5. Provision for holding Bonds issued in the form of the Stock Certificate by trustees and office holders.—(1) A Bond in the form of Stock Certificate may be held by a holder of an office—

(a) in his personal name, described in the books of the Small Industries Bank and in the Stock Certificate as a trustee whether as a trustee of the trust specified in his application or as a trustee without any such qualification; or

(b) by the name of his office.

(2) On an application made in writing to the Small Industries Bank in the form required by the Small Industries Bank the person in whose name a

Bond stands and on surrender of the Bond, the Small Industries Bank may—

(a) make an entry in its books describing him as a trustee of a specified trust or as a trustee without specification of any trust and issue a Stock Certificate in his name described as trustee with or without the specification of the trust as the case may be; or

(b) issue a Stock Certificate to him by the name of his office and make an entry in its books describing him as the holder of the Stock by the name of his office, according to the applicant's request provided—

(i) the request is in conformity with the provisions of sub-regulation (1) hereof;

(ii) the necessary evidence required by the Small Industries Bank in terms of sub-regulation (7) has been furnished; and

(iii) the Bond, if it is in the form of promissory note, has been endorsed in favour of the Small Industries Bank and if in the form of Stock Certificate, has been received by the registered holder in Form X.

(3) The Stock Certificate under sub-regulation (1) may be held by the holder of the office either alone or jointly with another person or persons or with a person or persons holding an office.

(4) When the Stock is held by a person in the name of his office, any documents relating to the Stock Certificate concerned may be executed by the person for the time being holding the office by the name in which the Stock Certificate is held as if his personal name were so stated.

(5) Where any transfer deed, power of attorney or other document purporting to be executed by a Stock Certificate holder described in the books of the Small Industries Bank as a trustee or as a holder of an office is produced to the Small Industries Bank, the Small Industries Bank shall not be concerned to inquire whether the Stock-holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to give any such power or to execute such deed or other document and may act on the transfer deed, power of attorney or document in the same manner as though the executant is a Stock Certificate holder and whether the Stock Certificate holder is or is not described in the transfer deed, power of attorney or document as a trustee or as a holder of an office and whether he does or does not purport to execute the transfer deed, power of attorney or document in his capacity as a trustee or as a holder of the office.

(6) Nothing in these Regulations shall, as between any trustees or office holder and the beneficiaries under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees or office holders to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust the terms of the instrument constituting the trust, or the rules governing the association of which the Stock Certificate holder is a holder of an office and neither the Small Industries

Bank nor any person holding or acquiring any interest in any Stock Certificate shall by reason only of any entry in any register maintained by the Small Industries Bank in relation to any Stock Certificate or any Stock Certificate holder or of anything in any document relating to Stock Certificate be affected with notice of any trust or of the fiduciary character of any Stock Certificate holder or of any fiduciary obligation attaching to the holding of any Stock Certificate.

(7) Before acting on any application made, or on any document purporting to be executed, in pursuance of this Regulation by a person as being the holder of any office, the Small Industries Bank may require the production of evidence that such person is the holder for the time being of that office.

6. Provision for holding of bonds issued in the form of promissory notes by trust/trustee(s) :—(1) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1) of Regulation 4, the Small Industries Bank may, at the request of the applicant and without liability to the Small Industries Bank, issue a Bond in the form of promissory note in the name of a specified trust or trustee(s) of that trust, or as the case may be, in the personal name of the applicant, describing him as a trustee, whether as a trustee of the trust specified in his application or as a trustee without such specifications.

(2) Where a Bond in the form of promissory note stands in the personal name of the holder, the Small Industries Bank may, on an application made by him in the form required by the Small Industries Bank and on surrender of such Bond, issue a renewed Bond in the form of a promissory note in the manner laid down in sub-regulation (1) hereof provided that—

(i) the necessary evidence required by the Small Industries Bank in terms of sub-regulation (6) hereof has been furnished; and

(ii) the Bond has been endorsed in favour of the Small Industries Bank.

(3) The Bond under sub-regulation (1) may be held by a trustee of any trust either alone or jointly with another person or persons as trustees of that trust.

(4) Where a Bond in the form of promissory note purports to have been endorsed by the Bond holder as a trustee, or where any power of attorney or other document purporting to be executed by the Bond holder is produced to the Small Industries Bank, the Small Industries Bank shall not be concerned to enquire whether the Bond holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to make such endorsement or execute such power of attorney or other document, and may act on the endorsement, power of attorney or document in the same manner as though such endorser is a Bond holder and whether the Bond holder is or is not described in the endorsement, power of attorney or document as a trustee, and whether he does or does not purport to make endorsement or execute the power of attorney or document in his capacity as a trustee.

(5) Nothing in these regulations shall, as between any trustees and the Bank, under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust or the terms of the instrument constituting the trust.

(6) Before acting on any application made, in pursuance of this regulation by a person as being the trustee of any trust, the Small Industries Bank may require the production of evidence that such person is the trustee for the time being of that trust.

7. Persons disqualified to be holders:—No minor and no person who has been found by a competent court to be of unsound mind shall be entitled to be a holder of Bonds.

8. Payment of Interest:—(1) Interest on a Bond in the form of a promissory note shall be paid by the Office of Issue or any other office of the Small Industries Bank specified in the Bond Prospectus subject to compliance by the holder of the Bond with such formalities as the Small Industries Bank may require, and on presentation of the Bond.

(2) Interest on a Bond in the form of Stock Certificate shall be paid by issue of warrants crossed account payee or in such other manner as may be decided by the Small Industries Bank. The presentation of the Stock Certificate shall not be required at the time of payment of interest but the payee shall acknowledge the receipt at the back of the warrant.

(3) Interest on a Bond held in the form of an entry in the books of the Small Industries Bank shall be paid by the Small Industries Bank by issue of warrants crossed account payee or in such other manner as may be decided by the Small Industries Bank.

9. Procedure where Bond in the form of a promissory note is lost, etc. :—(1) Every application for the issue of a duplicate Bond in place of a Bond which is alleged to have been Lost, Stolen, Destroyed, or Mutilated or Defaced, either wholly or in part shall be addressed to the Office of Issue, and shall contain the following particulars, namely :—

- Bond No. for Rs. of the percent Small Industries Development Bank of India Bonds, ... (year)
- Last half-year for which interest has been paid;
- The person to whom such interest was paid;
- The person in whose name Bond was issued (if known);
- The circumstances attending the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement; and
- Whether the Loss or Theft was reported to the police.

- (2) Such application shall be accompanied by:—
- where the Bond was lost in the course of transmission by registered post, the Post Office registration receipt for the letter containing the Bond;
 - a copy of the police report, if the Loss or Theft was reported to the police;
 - if the applicant is not the registered holder, an affidavit sworn before a magistrate testifying that the applicant was the last legal holder of the Bond, and all documentary evidence necessary to trace back the title to the registered holder; and
 - any portion or fragments which may remain of the Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced bond.

10. Notification in Gazette :—The Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of a Bond or portion of a Bond in the form of a promissory note shall forthwith be notified by the applicant in three successive issues of the Gazette of India and of the local official Gazette, if any, of the place where the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement occurred. Such notification shall be in the following form or as nearly in such form as circumstances permit :—

"The Small Industries Development of India Bond No. of the per cent Bond for Rs. originally standing in the name of and last endorsed to the proprietor, by whom it was never endorsed to any other person [having been] *Lost|Stolen|Destroyed| Mutilated|Defaced, notice is hereby given that payment of the above Bond and the interest thereupon has been stopped at the Office of Issue, and that application is about to be made or has been made for the issue of a duplicate in favour of the proprietor. The public are cautioned against purchasing or otherwise dealing with the above-mentioned Bond.

Name of the person notifying _____
Residence _____ "

*Delete whichever is not applicable

11. Issue of duplicate Bond and taking of indemnity :—(1) After the publication of the last notification prescribed in Regulation 10, the Prescribed Officer shall if he is satisfied of the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of the Bond and of the justice of the claim of the applicant, cause the particulars of the Bond to be included in a list published under Regulation 13, and shall order the Office of Issue—

- if only a portion of the Bond has been Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced, and if a portion thereof sufficient for its identification has been produced, to pay interest and to issue to the applicant, on execution of an Indemnity such as is hereinafter mentioned a duplicate Bond in place of that of which a portion has been so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or

Defaced either immediately after the publication of the list under Regulation 13 or on the expiry of such period as the Prescribed Officer may consider necessary from the date of the publication of the said list;

- if a portion of the Bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced, sufficient for its identification has been produced—
 - to pay to the applicant, two years after the publication of the said list, and on the execution of an indemnity in the manner hereinafter prescribed, the interest in respect of the Bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced till the expiry of the next period of four years next as hereinafter provided; and
 - to issue to the applicant a duplicate Bond in place of the Bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated for Defaced four years after the date of publication of the said list, provided that :—
 - if the date on which the Bond is due for repayment falls earlier than the date on which the said period of four years expires, the Prescribed Officer shall, within six weeks of the former date, invest the principal amount due on the Bond in the Post Office Savings Bank, and shall repay this amount, together with any interest which may have accrued thereon in such Bank, to the applicant at the time when a duplicate Bond would otherwise have been issued, and
 - if at any time before the issue of the duplicate Bond the original Bond is discovered or it appears to the Officer of Issue for other reasons that the order should be rescinded, the matter shall be referred to the Prescribed Officer for further consideration and in the meantime all action on the order shall be suspended. An order passed under this sub-regulation shall, on expiry of the period of four years referred to therein, become final unless it is in the meantime rescinded or otherwise modified.

(2) The Prescribed Officer may, at any time prior to the issue of a duplicate Bond, if he finds sufficient reason, alter or cancel any order made by him under this regulation and may also direct that the interval before the issue of a duplicate Bond shall be extended by such period not exceeding four years as he may think fit.

(3) Indemnities —

- (i) when executed under sub-regulation (1)(a) shall before twice the amount of interest involved, that is to say, twice the amount of all back interest accrued due on the Bond plus twice the amount of all interest to accrue due thereon during the period which will have to elapse before

- the issue of a duplicate Bond can be made, and
- (ii) in all other cases shall be for twice the face value of the Bond plus twice the amount of interest calculated in accordance with clause (i).
 - (b) the Prescribed Officer may direct that such indemnity shall be executed by the applicant alone or by the applicant and one or two sureties approved by him as he may think fit.

12. Procedure when a Bond in form of a Stock Certificate is lost, etc. :—(1) Every application for the issue of a duplicate Stock Certificate in place of a Stock Certificate which is alleged to have been Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced either wholly or in part shall be addressed to the Office of Issue and shall be accompanied by —

- (a) the Post Office registration receipt of the letter containing the Stock Certificate, if the same was lost in transmission by registered post;
- (b) a copy of the police report, if the Loss or Theft was reported to the police;
- (c) affidavit sworn before a Magistrate testifying that the applicant is the legal holder of the Stock Certificate and that the Stock Certificate is neither in his possession nor has it been transferred pledged or otherwise dealt with by him; and
- (d) any portions or fragments which may remain of the Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced Stock Certificate.

(2) The circumstances attending the loss shall be stated in the application.

(3) The Prescribed Officer shall, if he is satisfied of the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of the Stock Certificate, direct the issue of a duplicate Stock Certificate in lieu of the original Certificate.

13. Publication of list: (1) The list referred to in Regulation 11 shall be published half-yearly in the Gazette of India in the months of January and July or as soon afterwards as may be convenient.

(2) All Bonds in respect of which an order has been passed under Regulation 11 shall be included in the first list published next after the passing of such order and thereafter such Bonds shall continue to be included in every succeeding list until the expiration of four years from the date of first publication.

(3) The list shall contain the following particulars regarding each Bond included therein, namely, the name of the issue, the number of the Bond, its value, the name of the person to whom it was issued, the

date from which it bear interest, the name of the applicant for a duplicate, the number and date of the order passed by the Prescribed Officer for payment of interest or issue of a duplicate, and the date of publication of the list in which the Bond was first included.

14. Discretion of the Small Industries Bank :—Notwithstanding anything contained in Regulations 10, 11, 12 and 13, where the Small Industries Bank deems fit, in any case, it shall be lawful for the Small Industries Bank in its absolute discretion to dispense with the procedure prescribed therein regarding the issue of duplicate Bond and issue duplicate Bond upon such terms as to indemnity or otherwise, as it may deem fit.

15. Determination of a mutilated Bond as a Bond requiring issue of duplicate :—It shall be at the option of the Prescribed Officer to treat a Bond which has been Mutilated or Defaced as a Bond requiring issue of a duplicate under Regulation 11 or a mere renewal under Regulation 19.

16. When a Bond in the form of promissory note may be required to be renewed :—(1) A holder of a Bond in the form of a promissory note may be required by the Office of Issue to receipt the same for renewal in any of the following cases, namely—

- (a) if only sufficient room remains on the back of the Bond for one further endorsement or if any word is written upon the Bond across the existing endorsement or endorsements;
- (b) if the Bond is torn or in any way damaged or crowded with writing or unfit, in the opinion of the Office of Issue;
- (c) if any endorsement is not clear and distinct or does not indicate the payee or payees, as the case may be, by name or is made otherwise than in one of the endorsement cages on the back of the Bond;
- (d) if the interest on the Bond has remained undrawn for ten years or more;
- (e) if the interest cages on the reverse of the Bond have been completely filled or if the vacant printed cages on the reverse of the Bond do not correspond with the half-years for which interest has become due on the date when the Bond is presented for drawal of interest;
- (f) if the Bond having been encased three times for payment of interest is presented for re-encasement; and
- (g) if in the opinion of the Office of Issue, the title of the person presenting the Bond for payment of interest is irregular or not fully provided

(2) When requisition for renewal of a Bond has been made under sub-regulation (1) payment of any further interest thereon shall be refused until it is received for renewal and actually renewed.

17. Person whose title to a Bond of a deceased sole holder may be recognised:—(1) The executors or administrators of a deceased sole holder of a bond (whether a Hindu, Mohammedan, Parsi or otherwise) or the holder of a succession certificate issued under Part X of the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) in respect of the Bond shall be the only persons who may be recognised by the Office of Issue (subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer) as having any title to the Bond.

(2) Notwithstanding anything contained in Section 45 of Indian Contract Act, 1872 (9 of 1872), in the case of a Bond issued, sold or held payable to two or more holders, the survivor or survivors and on the death of the last survivor, his executors, administrators, or any person who is the holder of a succession certificate in respect of such Bond shall be the only person who may be recognised by the Office of Issue (subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer) as having any title to the Bond.

(3) The Office of Issue shall not be bound to recognise such executors or administrators unless they shall have obtained probate or letters of administration, as the case may be, from a competent court or office in India.

(4) Notwithstanding anything contained in sub-regulations (1), (2) and (3), where the Prescribed Officer in his absolute discretion thinks fit, in any case, it shall be lawful for him to dispense with the production of probate or letters of administration or other legal representation upon such terms as to indemnity or otherwise, as he may think fit.

18. Nomination:—(1) Notwithstanding anything contained in Regulation 17, where a Bond is held by one or more persons, the sole holder or, as the case may be, all the holders together may nominate any person or persons to whom, in the event of the death of the sole holder or the death of all the holders, the amount due on the Bond may be paid.

Provided that when a Bond is held by two or more persons, the nominee shall become entitled to receive the amount only on the death of all the holders.

Provided further that nothing contained in this Regulation shall affect any claim which any representative of a deceased holder of a Bond may have against the nominee in respect of any amount due on the Bond.

(2) If two or more persons are nominated under sub-regulation (1), the amount due on the Bond shall be distributed amongst the nominees in the manner specified in the nomination, and in the absence of such specification, the amount shall be distributed equally among all the nominees.

Provided, however, that if no nomination sub-nits or, if such nomination relates only to a part of the amount due, the whole amount or part thereof to which the nomination does not relate, shall be paid to the persons who may be entitled thereto under sub-regulation (2) of Regulation 17.

(3) A nomination under sub-regulation (1) may be made by the sole holder or, as the case may be, all the holders together in Form XV.

(4) A nomination may be made only in respect of a Bond which is held in the individual capacity of the holder and not in any representative capacity as the holder of an office or otherwise.

(5) Where the nominee is a minor, the sole holder or as the case may be, all the holders together may appoint any person (not being a minor) to receive the amount due on the Bond during the minority of the nominee.

(6) Where a Bond is held in the name of a minor, the nomination, if any, shall be made by a person lawfully entitled to act on behalf of the minor.

(7) A nomination may be substituted by submitting an application in Form XV or cancelled by submitting an application in Form XVI, together with the Bond, to the Small Industries Development Bank of India.

(8) A nomination or a substitution or a cancellation of a nomination shall be registered in the books of the Small Industries Bank and the fact of registration shall be noted on the Bond and, on such registration the said nomination, cancellation or substitution, as the case may be, shall be deemed to be effective from the date on which it was submitted.

(9) The rights, which a nominee has acquired in relation to the Bond under a nomination duly made and registered under this Regulation, shall not be affected by reason of the issue of a duplicate Bond and the nominee shall have the same rights in relation to the duplicate Bond as he had in relation to the original Bond.

19. Receipt for renewal; etc:—(1) Subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer, the Office of Issue may, by its order, on the application of the holder—

- (a) on his delivering the Bond or Bonds in the form of promissory note or notes and on his satisfying the Office of Issue regarding the justice of his claim, renew, sub-divide or consolidate the note or notes provided the note or notes has or have been received in Form I, II or III, as the case may be;
- (b) convert the note or notes into a Stock certificate or Stock Certificates provided the note or notes has or have been endorsed as follows—

"Pay to the Small Industries Development Bank of India"; or

- (c) renew, sub-divide or consolidate a Stock Certificate or Stock Certificates provided the Stock Certificate or Stock Certificates has or have been received in Form VI, VII or VIII, as the case may be;
- (d) convert the Stock Certificate or Stock Certificates into promissory note or notes

provided the Stock certificate or Stock Certificates has or have been received in Form IX, or

- (e) convert the Bonds of one series into those of another provided—
 - (i) inter-series conversion is permissible; and
 - (ii) the conditions governing such conversion are complied with.

(2) The Office of Issue may, under the orders of Prescribed Officer, require the applicant for renewal, sub-division or consolidation of a Bond under the sub-regulation (1) to execute an indemnity in Form IV with one or more sureties approved by him.

20. Renewal of Bond in case of dispute as to title.—Where there is a dispute as to the title to a Bond in respect of which an application for renewal has been made, the Prescribed Officer may :—

- (a) where any party to the dispute has obtained a final decision from a court of competent jurisdiction declaring him to be entitled to such Bond, issue a renewed Bond in favour of such party, or
- (b) refuse to renew the Bond until such a decision has been obtained.

EXPLANATION :

For the purposes of this Regulation, the expression "final decision" means a decision which is not appealable or a decision which is appealable but against which no appeal has been filed within the period of limitation allowed by law.

21. Liability in respect of Bond renewed, etc :—When a duplicate Bond has been issued under Regulation 11 or a renewed Bond has been issued or a new Bond has been issued upon sub-division or consolidation under Regulation 19, in favour of a person, the Bond so issued shall be deemed to constitute a new contract between the Small Industries Bank and such person and all persons deriving title thereafter through him.

22. Discharge

The Small Industries Bank shall be discharged from all liability in respect of the Bond or Bonds

paid on maturity or in case of which a duplicate, renewed, sub-divided or consolidated Bond or Bonds has or have been issued—

- (a) in the case of payment, after the lapse of four years from the date on which payment was due;
- (b) in the case of a duplicate Bond after the lapse of four years from the date of the publication under Regulation 13 of the list in which the Bond is first mentioned, or from the date of the payment of interest on the original Bond, referred to in Regulation 11 whichever date is later;
- (c) in the case of a renewed Bond or of a new Bond issued upon sub-division or consolidation after the lapse of four years from the date of issue thereof.

23. Discharge in respect of interest :—Save as otherwise expressly provided in the terms of the Bond, no person shall be entitled to claim interest on any such Bond in respect of any period which has elapsed after the earliest date on which demand could have been made for the payment of the amount due on such Bond.

24. Discharge of a Bond :—(a) When a Bond held in the form of promissory note or Stock Certificate becomes due for payment or principal, it shall be presented at the office of the Small Industries Bank at which interest thereon is payable or at the Office of Issue duly signed by the holder to its reverse;

- (b) When a Bond in the form of an entry in the account becomes due for payment of principal, a duly signed receipt in Form XIV shall be furnished by the holder to the Office of Issue.

25. Exercise of Powers on behalf of the Small Industries Bank :—The powers exercisable by the Small Industries Bank under Regulations 4(2), 5(2), 5(7), 6(6) and 8(1) may be exercised on behalf of the Small Industries Bank by the Managing Director and/or a General Manager of the Small Industries Bank.

THE SCHEDULE

FORM I [See Regulation 19 (1) (a)]

Form of endorsement for renewal of a Bond in the form of a Promissory Note

Received in lieu hereof, a renewed Note Payable to with interest payable by
(name of holder)

the Small Industries Development Bank of India,

(place)

Signature of the holder duly authorised representative of

(name of holder)

FORM II [See Regulation 19(1)(a)]

Form of endorsement for sub-division of a Bond in the form of a Promissory Note

Received in lieu hereof Notes for Rs. payable to respectively with interest payable by
(name of holder)

the Small Industries Development Bank of India,

(place)

Signature of the holder duly authorised representative of

(name of holder)

FORM III [See Regulation 19(1)(c)]

To issue or renew or consolidation of Bonds in the form of Promissory Note

Recd. the sum of Rs..... for Rs.....
(name of holder)

by consolidating one Note or Notes No.(s)..... [mentioning the number(s) and amount(s) of the other Note(s) desired to be consolidated with it and specifying the issue] with interest payable by the Small Industries Development Bank of India,
(place)

Signature of the holder/ duly authorised representative of

[name of holder]

FORM-IV [See Regulation 19(2)]

Know all by these presents that we
(name of principal)

Son of Resident of Son
and (Surety No 1)
of Resident of
and Son of
(Surety No. 2)

Resident of hereby bind ourselves and each
of us, our and each of our heirs, executors, administrators and representatives and all of them jointly and severally to the Small
Industries Development Bank of India as established under the Small Industries Development Bank of India Act, 1989 (hereinafter
called "the said Small Industries Bank") for payment of the sum of Rs..... to the said
Small Industries Bank, its certain attorneys, successors and assigns.

AND Each of us the said
(name of Principal and Name of Surety/Sureties)

..... hereby covenant with the said Small Industries Bank that if any suit shall be brought
touching the subject matter of this obligation or the condition hereunder written in any Court subordinate to the High Court
of Judicature at Lucknow/Bombay, the same may, at the instance of the said Small Industries Bank, whoever may be a party
to such suit be removed unto, tried and determined by any of the said High Courts in its extraordinary original civil
jurisdiction at Lucknow/Bombay.

WHEREAS THE said has
(name of Principal)

applied to the said Small Industries Bank, for the renewal/consolidation/sub-division of Bond(s) issued by the said Small
Industries Bank mentioned in the schedule hereto.

AND WHEREAS the said Small Industries Bank has consented and agreed to accept the said application on the said.....
with two good and sufficient sureties entering into and executing the above
(name of Principal)

written Bond subject to the condition hereunder written :

AND WHEREAS the above bounden
(name of Surety/Sureties)

at the request of the said
(name of Principal)

has/have agreed to become surety/sureties for
(name of Principal)

and to join with the said
(name of Principal)

in executing the above written bond.
(name of Principal)

Now the condition of the above written bond is such that if the above bounden.....
(name of Principal)

and or each of them or their heirs, executors, administrators or
(name of Surety/Sureties)

representatives or any or either of them shall from time to time and at all times hereafter effectually save, defend, keep harmless
and indemnified the said Small Industries Bank from and against the claims and demands of all persons claiming to be entitled
to the Bond(s) issued by the said Small Industries Bank mentioned in the schedules hereto or to any interest thereon and of
other persons whomsoever in respect of the said Bond(s) or the renewal thereof or the payment of interest thereon and from and
to or against all damages, losses, costs, charges and expenses which the said Small Industries Bank may sustain, incur or be liable
of any interest due on the said Bond(s) or renewed Bond(s) then the above written bond shall be void but otherwise the same

Sheduled and delivered by
(name of Principal)

in the presence of and of

Date :

The Schedule herein referred to

Nature and description of the Bond	Number	Date of Issue	Amount
------------------------------------	--------	---------------	--------

FORM V [See Regulation 3(3)]

Form of Transfer

I/We do hereby assign and

transfer my our interest or share in the inscribed Stock of the per cent Small Industries Development Bank of India Bonds, amounting to Rs. being the amount/a portion of the Stock for Rs. as specified on the face of this instrument together with the accrued interest thereon unto

his/her/their executors, administrators or assigns, and I/We do freely accept the above Stock transferred to the extent it has been transferred to me/us.

I/We hereby request that on my/our being registered as the holder(s), of the Stock hereby transferred to me/us the aforesaid Stock Certificate to the extent it has been transferred to me/us may be renewed in my/our name(s) converted in my/our name(s)

*I/We hereby request that on the above transferee(s) being registered as the holder(s) of the Stock hereby transferred to him/them the aforesaid Stock Certificate to the extent it has not been transferred to him/them may be renewed in my/our name(s).

As witness our hand the day of one thousand nine hundred and signed by the above named transferor in the presence of ** (Transferor)

Address :

(Transferee)

Address :

Signed by the above named transferee in the presence of **

*This paragraph is to be used only when a portion of a certificate is transferred.

**Signature, occupation and address of witness.

FORM VI [See Regulation 19(1)(c)]

Form of endorsement for renewal of Stock Certificate

Received in lieu hereof a renewed Stock Certificate of the per cent Small Industries Development Bank of India Bond, for Rs.

in the name of payable by the Small Industries Development Bank of India, (place)

Signature of the registered holder/
duly authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM VII [See Regulation 19(1)(c)]

Form of endorsement for sub-division of a Stock Certificate

Received in lieu of this Stock Certificate No. Certificates for Rs. respectively of the per cent Small Industries Development Bank of India Bonds, with interest payable by the

Small Industries Development Bank of India, (place)

Signature of the registered holder/
duly authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM VIII [See Regulation 19(1)(c)]

Form of endorsement for consolidation of Stock Certificates

Received in lieu of Stock Certificate Nos..... for Rs.....
respectively of the per cent Small Industries Development Bank of India Bonds,.....

a Stock Certificate for Rs. of the per cent
Small Industries Development Bank of India Bonds, with interest payable by the

Small Industries Development Bank of India,
(year)
(place)

Signature of the registered holder/
duly authorised representative

(name of registered holder)

FORM IX [See Regulation 19(1)(d)]

Form of endorsement for conversion of Stock Certificates into Promissory Notes

Received in lieu of this Stock Certificate
Notes of Rs. each together with a new Stock
Certificate for the balance amounting to Rs. with interest
payable by the Small Industries Development Bank of India,

(place)
Signature of the registered holder/
duly authorised representative

(name of registered holder)

FORM X [See Regulation 5(2)(b),(iii)]

Form of receipt for renewal of a Bond issued in the form of Stock Certificate

Received in lieu hereof a renewed Stock Certificate of the per cent Small
Industries Development Bank of India Bonds, for Rs.
in favour of with interest payable by the Small Industries
Development Bank of India,
(place)

(Signature of registered holder)

FORM XI [See Regulation 3(3A)(c)]

Requisition for conversion of Bond in the form of Promissory Note into an entry in the account with the Small Industries
Bank

To :
Manager,
Bonds Section,
Small Industries Development Bank of India,
Bombay/Lucknow.

Date 19

Dear Sir,

Re : % Small Industries Development Bank of India Bonds, (..... Series)

We hereby declare that the Small Industries Development Bank of India Bonds issued in the form of Promissory Note(s) of the aggregate face value of Rs. listed on the reverse is/are our property and request that we may please
be allowed to hold the same in the form of an entry in the account to be maintained by the Small Industries Bank in our
names for which purpose we are surrendering herewith the relevant bond scrips duly endorsed in favour of the Small Industries
Bank. The name, designation and specimen signature(s) of the person(s), who has/have been authorised to operate the account
are as per details given on the reverse.

In this connection, we are enclosing hereto deed of indemnity in your favour, duly stamped and executed on our
behalf as per your draft.

We request you to kindly send to us in due course certificate of holding of bonds in form of an account with the Small
Industries Bank and periodic statement of our holding at the address given above.

In the meanwhile please acknowledge receipt.

Yours faithfully,
Signature(s) of the registered holder(s)/
or his duly authorised representative
Name(s) of registered holder(s)

FORM XIII [See Regulation 3(3A)(g)]

Form of transfer of Bonds in the form of an entry in the account with the Small Industries Bank

We, as the holder(s) of the Bonds in the form of an entry in an account with the Small Industries Development Bank of India do hereby assign and transfer our holding to the extent of Rs. being the entire/partition of our Bond holding together with accrued interest thereon upto to and in favour of

We, do freely accept the transfer of the above Bonds to our name.

Witness our hand this day of 19

Signed by the above named in the presence of (Seller)

Signed by the above named in the presence of (Buyer)

Note : To be stamped in accordance with Article 62(c) of the Indian Stamp Act, 1899 (as amended by the Local Stamp Act of the State in which it is executed).

FORM XIV [See Regulation 24(b)]

Form of discharge for the Bonds held in the form of entry in the account with the Small Industries Bank

To :

Manager,
Bonds Section,
Small Industries Development Bank of India,
Bombay/Lucknow.

Dear Sir,

Re : -----% Small Industries Development Bank of India Bond(s). (..... Series)

Received the principal amount with accrued interest on the date of maturity on the Captioned Bond(s) of the nominal face value of Rs. (Rupees only) held in form of an entry in the books of the Small Industries Development Bank of India to the credit of (bond holder). It is certified that the nominal amount of the Bond(s) and the accrued interest as on date of maturity agree with my/our books.

Yours faithfully,
Signature(s) of the registered
holder(s)/or his duly authorised
representative
Name(s) of registered holder(s)
Date :
Place :

FORM XV [See Regulation 18]

Form of nomination—substitution of nomination

1. I/We, nominate the following person(s) to whom, in the event of my/our/minor holder's death, the amount due on the Bonds specified below may be paid:

BONDS

Sr. No.	Description	Distinctive Number	Date of Issue	Face Value
1.				
2.				
3.				

NOMINEE(S)

Name	Address	Date of Birth (if the nominee is a minor)	Percentage of amount payable @
1.			
2.			
3.			

2. *As the nominee(s) at serial No.(s) above is/are minor(s), I appoint Shri/Smt./Kumari as the person to receive the amount due thereon in the event of my/our/minor holder's death during the minority of such nominee(s).
(Name and Full address)

3. **This nomination is in substitution of the nomination dated.....made by me/us and registered in the books of the Small Industries Development Bank of India onwhich shall stand cancelled on registration of this nomination.

***(Signature of the holder)

Signatures and address of witnesses :

1.

Place :

2.

Date :

**

Indicate in this column the percentage of total amount payable to each nominee.

*

Strike out this paragraph when the nomination is not in favour of a minor.

**

Strike out this paragraph when the nomination is not in substitution of one already made.

If a Bond is held in the name of a minor, the nomination should be signed by a person lawfully entitled to act on behalf of the minor.

FORM XVI [See Regulation 18(7)]

Form of cancellation of nomination

I/Wedo hereby cancel the nomination
 [Name(s) of the holder(s)]
 datedmade by me/us in respect of the Bonds specified below and registered
 on

Sr. No.	Description	Distinctive Number	Date of Issue	Face Value
1.				
2.				
3.				

Place :

Date :

*(Signature of the holder)

(Name of the holder)

Signatures and address
 of witnessess :

1.

2.

If the Bond is held in the name of a minor, the cancellation of nomination should be signed by a person lawfully entitled to act on behalf of the minor.

(R. S. AGRAWAL,
 Managing Director,

FOOT NOTE : Certified that Industrial Development Bank of India have given approval to Small Industries Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1990 vide their letter dt. June 21, 1990.

Manager (Legal)